ISSN NO. 0971-8443

बाल भारती

जुलाई 2019

मूल्य : ₹ 15

- राष्ट्रपिता गांधी
- गोरा साधु और उनका संग्रहालय
- हाथी चले अस्पताल

पर्यावरण पर हमारी पुस्तकें

प्रकाशन विभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार
सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्पलेक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली -110003
वेबसाइट: www.publicationsdivision.nic.in

ऑर्डर के लिए संपर्क करें :
फोन : 011-24367260, 24365610
ई-मेल : businesswng@gmail.com
हमारी पुस्तकें ऑनलाइन खरीदने के लिए
कृपया www.bharatkosh.gov.in पर जाएं।
चुनिंदा ई-बुक एमेज़ॉन और गूगल प्ले पर उपलब्ध।

फॉलो करें @DPD_India

बच्चों की संपूर्ण पत्रिका

बाल भारती

1948 से प्रकाशित

वर्ष 72 : अंक : 2 पृष्ठ : 56 | आषाढ़-श्रावण 1941 | जुलाई 2019

लेख

राष्ट्रपिता गांधी	अक्षय कुमार जैन	11
गोरा साधु और उनका संग्रहालय	सीताराम गुप्ता	16
हाथी चले अस्पताल	नवनीत कुमार गुप्ता	21

कहानियां

सपनों की शहज़ादी जंगल जलेबी	नासिरा शर्मा	6
मेरी प्यारी दादी	मनीषा	14
छोटा जादूगर	शंकर लाल माहेश्वरी	23
लड़की मोमबत्ती वाली	सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'	26
स्वच्छताग्रही फुफ्फो	माशा	32
जीयनपुर का पानी	जयप्रकाश सिंह बंधु	36
मां का मंत्र	डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल	41
शहद की तलाश	चैतन्य	47
नई साईकिल	पवन कुमार वर्मा	49

कविताएं

मिलकर पढ़ने जाएंगे	मनमोहन गुप्ता	10
पानी है जीवन का वरदान	कृष्ण कुमार उपाध्याय	39
मुझे एक नाम देकर तो देखो	ध्रुव सहगल	40
रच दे नूतन संसार बेटी	स्वाती शाकम्भरी	53

महान कवि : महान कविताएं

मेरा मुन्ना बड़ा सयाना	निरंकार देव सेवक	27

उपन्यास

पीटर पैन	43

- चित्रकथा 28-31
- दुनिया हमारे आस-पास 52

वरिष्ठ संपादक : **राजेंद्र भट्ट**

संपादक : **आभा गौड़**

दूरभाष : 011-24362910

व्यापार व्यवस्थापक

ई-मेल : *pdjucir@gmail.com*

दूरभाष : 011-24367453

संयुक्त निदेशक (उत्पादन) : **वी. के. मीणा**

आवरण : **राजिन्द्र कुमार**

चित्रांकन : **प्रज्ञा उपाध्याय, शिवानी, गुंजन द्विवेदी**

ई-मेल : *balbharti1948@gmail.com*

वेबसाइट : *www.publicationsdivision.nic.in*

फेसबुक पेज : *www.facebook.com/publicationsdivision*

संपादकीय पत्र व्यवहार का पता :

संपादक 'बाल भारती', कमरा नं- 645, छठा तल, सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

हमारी बात

रिमझिम बारिश और स्कूल से लौटते बच्चे, घर के आंगन, पार्कों और मैदानों में दौड़ते-भागते, हंसते-खिलखिलाते, भीगते बच्चे! न स्कूल ड्रेस की चिंता न कॉपी-किताबों या दूसरे किसी सामान की चिंता। हालांकि स्कूल खुल गए हैं, गृह कार्य और अन्य गतिविधियां बढ़ गई हैं लेकिन प्रकृति से विलग हम हैं कहां...? हम उसी का हिस्सा हैं और बारिश भी... तो क्यों न आनंद उठाएं भीगने का... हम और बारिश... बारिश और हम।

वर्षा के साथ हरेक के अपने अनुभव जुड़े हैं। शायद ही कोई हो जिसने भीगने का आनंद न लिया हो। बारिश है ही ऐसी चीज़ जो न सिर्फ तन भिगोती है अपितु मन भी भिगो जाती है। बारिश आने से पहले ही घनघोर घटाओं से आकाश अट जाता है। मौसम सुहाना हो जाता है। हवा में हल्की सी ठंडक का अहसास, पक्षियों का कोलाहल और आंखें बार-बार आकाश की ओर ताकने लगती हैं... इंतजार करने लगती हैं रिमझिम फुहारों का... जबकि पता हो कि बारिश से बचाव का कोई साधन नहीं है तो बच्चो मुक्त कर देना चाहिए खुद को किसी भी बंधन से और भरपूर आनंद लेना चाहिए मौसम का... बारिश का....।

साथियो! प्रकृति अपने विभिन्न मौसम चाहे वह सर्दी-गर्मी, वसंत हो या बरसात अथवा कोई भी प्रकृति दत्त प्रक्रिया जैसे बारिश हो, सूखा हो, आंधी हो या ज्वार भाटा, आदि के माध्यम से संवाद स्थापित करती है। यह बारिश की ऋतु है यानि सृजन का मौसम। इन दिनों धरती की उर्वरता बढ़ जाती है। इस दौरान प्रकृति हमारे लिए अपनी कोख में बहुत कुछ सौगातें समेट लेने की स्थिति होती है और देने की स्थिति में भी होती है।

बच्चो! इस अवसर पर तुम भी उसे कुछ उपहार दो यानी बस इतना करना है कि अपने आस-पास सफाई रखो और जितने भी फल-सब्जियां खाओ उनके बीज अपने घर, आंगन, स्कूल और खेल के मैदान, कहीं भी मिट्टी में बोते चलो। देखना कुछ ही दिन में नवीन कोंपले तुम्हारा मन मोह लेंगी और अगली बारिश भरपूर हरियाली के साथ मनाएंगे हम... आप और वे सभी 'सजीव' पौधे जिन्हें धरती पर लाने का श्रेय आपको जाता है। बारिश का मजा लो...

आपकी बात

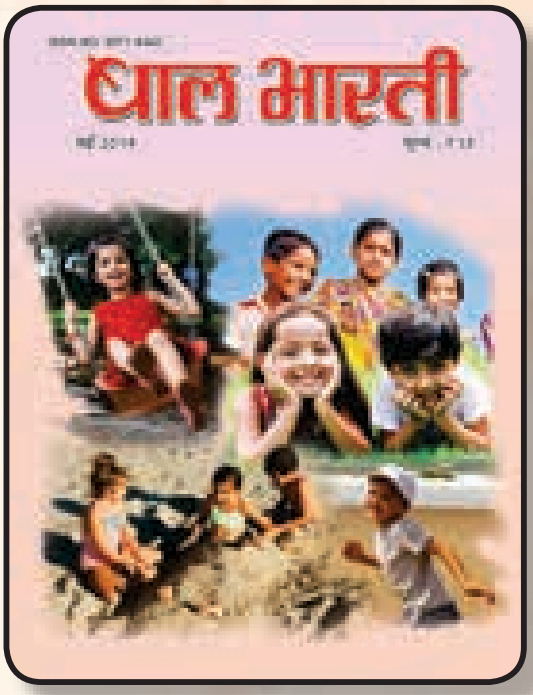

बाल भारती मई अंक पढ़ा। इसमें प्रकाशित सभी लेख कविता और कहानियां बाल पाठकों के अनुरूप होते हैं और उपयोगी भी। मुझे *बाल भारती* पढ़कर बहुत पसंद आई। बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए यह पत्रिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस अंक में प्रकाशित लेख *'काम को सम्मान'*, *'प्यारे पक्षी'* और *'प्रेरक हों बाल फिल्में'* रोचक थे। कहानियों में *'सांप-सांप-सांप'*, *'जोकर की टोपी'*, *'प्रेरणा'* और *'जैसी सोच वैसी करनी'* अच्छी लगी। मैं इस पत्रिका का नियमित पाठक हूं। इतनी अच्छी पत्रिका प्रकाशित करने के लिए प्रकाशन विभाग को बहुत-बहुत धन्यवाद।

–अंकित, रोहिणी, नई दिल्ली

हमेशा की तरह *बाल भारती* मई अंक मुझे समय से मिल गया। इस अंक में प्रकाशित लेख *'प्रेरक हों बाल फिल्में'*, *'प्यारे पक्षी'* और *'काम का सम्मान'* मुझे अच्छी लगी। कहानियों में *'अखिल की लाजवाब छुट्टियां'*, *'बूढ़े बाबा की सीख'* और *'साथ रहे परिवार'* रोचक थे। यह पत्रिका बच्चों के लिए बहुत ही उपयोगी है। मैं इसके हर अंक को पढ़ता हूं और अपने दोस्तों को भी पढ़ने के लिए देता हूं। इस पत्रिका को पढ़-पढ़ कर मेरा सामान्य ज्ञान बड़ गया है।

–समीर, कोलकाता

बाल भारती मेरे परिवार में 1998 से आ रही है। जब मैं स्कूल जाती थी तो पापा कभी-कभी लाते थे। लेकिन मैंने इस पत्रिका की सदस्यता ले ली है क्योंकि यह बच्चों के लिए ही नहीं हमारे लिए भी ज्ञानवर्धक है। किशोरावस्था के बच्चे बहुत कुछ इस पत्रिका के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। आज के इस समय में भाषा के स्तर पर यह हिंदी पत्रिका बाल पाठकों के लिए विशेष उपहार है। क्योंकि प्राय: सभी बाल पत्रिकाओं में भाषा के सरलीकरण के नाम पर सबसे अधिक खिलवाड़ हुआ है। हमें भाषा को सहजता से समृद्ध बनाना है। बच्चों को यदि हम अपनी भाषा का ही सही ज्ञान नहीं देंगे तो वे अधूरे ज्ञान के सहारे ही जीएंगे। इसलिए *बाल भारती* को मेरी शुभकामनाएं!

–प्रीति, रोहिणी, दिल्ली

बाल पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विषय में अपनी प्रतिक्रिया हमें भेजें।
आप हमें ई-मेल balbharti1948@gmail.com पर भी अपनी प्रतिक्रिया भेज सकते हैं। लेखकों से निवेदन है कि वे रचना के साथ अपना पता, ई-मेल, फोन नंबर, अवश्य भेजें। रचना की छायाप्रति अपने पास रखें। अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी।

सपनों की शहज़ादी
जंगल जलेबी

–नासिरा शर्मा

अनीस लगभग रोज़ ही सपने में मां की सुनाई कहानी का वह वृक्ष देखता था जो सड़क किनारे खड़े बिजली के खम्भों से भी ऊंचा था। बादलों तक पहुंच कर जैसे कि आसमान से बातें करता हुआ हरदम झूमता रहता था। कभी-कभार वह हवा से खेलने लगता तो उसकी हरी-हरी टहनियां अपनी पत्तियों के बीच से गोल-गोल आकार के कुछ फल गिरातीं जिन्हें वहां से गुज़रते बच्चे उठाकर खाते और एक-दूसरे को देखकर खिलखिला उठते थे। पेड़ पर बैठे बंदर मुंह चलाते हुए एकाएक अपने दांत निकाल उन पर खौखियाते, फिर खाने में मस्त हो जाते। यही हाल गिलहरियों का भी था। हरदम इस फुनगी से झूलती दूसरी फुनगी पर छलांग लगातीं कुछ न कुछ कुतरती रहती थीं। मां ने बताया था वह 'जंगल जलेबी' का पेड़ था। मां किसी न किसी बहाने दिन में एक बार उसका नाम जरूर लेती थीं। जैसे, ''अरे इस कपड़े का रंग बिल्कुल जंगल जलेबी जैसा है या फिर- लाल-हरा रंग साथ-साथ ठीक जंगल जलेबी की तरह मनभावन लगता है।

अनीस को मां की बातें सच्ची लगती थीं मगर उसका मन यह बात मानने को हरगिज़ तैयार न था कि सुनहरी रसीली जलेबियां हलवाई के थाल से उड़कर पेड़ की शाखों से लटक जाएंगी और अपना रंग-रूप बदल हरी-लाल हो जाएंगी, भला कैसे? अम्मा मुझे बहलाती हैं क्या? कुछ दिनों बाद वह एक और सपना देखने लगा जैसे वह हलवाई की दुकान पर

खड़ा है और हलवाई सर पकड़े खाली थाल को घूर रहा है, जहां कड़ाही से निकली कुरकुरी जलेबियां शीरे में डूबी मचल रही हैं और जैसे ही शीरे से निकाल वह थाल में डाली जाती हैं तुरंत उछल कर वह उड़ने लगती हैं।

अनीस ने मां से पूछा था, ''क्या आपने कभी जंगल जलेबी खाई है?''

''क्यों नहीं, उसका मीठा स्वाद मुझे भूले नहीं भूलता, आज भी खाने का मन करता है। गांव के घर से जब हम पाठशाला की ओर जाते थे तब रास्ते में एक पेड़ मिलता था। सब उसे जंगल जलेबी के नाम से जानते थे। तब हमारे गांव में कोई हलवाई नहीं था। एक बार हम क़स्बे की तरफ मेला देखने गए थे तो मेरे बाबा ने गुड़ की जलेबी हम सब भाई-बहनों को खिलाई थी, तब मेरे मन में यह विचार आया था कि देखो हलवाई ने हमारे जंगल जलेबी पेड़ के फल की कैसी नक़ल उतारी है, ढेरों मीठा डाल कर।'' इतना कह मां खूब हंसी थीं।

अनीस का बालमन यह सब बातें सुनकर सोचने लगता कि ज़रूर हलवाई जंगल से किसी दिन गुज़रा होगा। ज़मीन पर गिरी जंगल जलेबी को भूख के कारण चखा होगा और गांव आकर नक़ल कर बैठा होगा। उम्र बढ़ने के साथ उसके मन में जंगल जलेबी के वृक्ष को देखने की इच्छा तीव्र होने लगी और उसे खाने की भी, मगर मुम्बई शहर में उस पेड़ को ढूंढने कहां जाएं? एक दिन इसी खोजी सोच ने टीचर द्वारा सजा भी दिलवा दी। जब वह वृक्षारोपण पाठ पढ़ रहा था तो एकाएक पुस्तक में छपी वृक्षों की तस्वीर में ऐसा खोया कि वह घना वृक्ष हरे से सुनहरा हो गया और रसीली जलेबियों से भर गया। उससे टपकते शीरे की बूंद को वह मुंह खोल अपनी ज़बान पर लेने के लिए बेचैन हो उठा, तभी तेज़ आवाज़ से चौंक पड़ा।

''अनीस! यह क्या कर रहे हो?''

अनीस ने पाया कि सारी कक्षा हंस रही थी और वह गर्दन ऊंची किए ज़बान निकाले छत पर नज़र गड़ाए है, वह हड़बड़ा गया। ''पढ़ाई की तरफ ध्यान दो, कक्षा का अनुशासन खराब मत करो।'' इस बार टीचर ने डेस्क पर स्केल मार कर कहा तो हंसते बच्चे सहम गए और अनीस रुआंसा सा हो गया। अनीस के पास बैठे उसके मित्र ने देखा कि उसकी आंख से आंसू टपक कर पेड़ के चित्र पर गिरा है। उसने कनखियों से मित्र को देखा और सोचने लगा कि अनीस कक्षा का मॉनीटर है, पढ़ने में अच्छा। आज यह शरारत कैसे कर बैठा?

लंच के समय जब सारे बच्चे अनीस को चिढ़ाने लगे तो अमित ने अपना टिफिन बॉक्स खोलते हुए अनीस से पूछा, ''लंच में आज क्या लाए हो?''

''जंगल जलेबी!'' अचानक हाथ पर हाथ धरे अनीस खीज उठा। 'जंगल जलेबी!' अमित ने चौंक कर मित्र को देखा और ज़ोर-ज़ोर हंसने लगा, ''तू पागल हो गया है ... जंगल जलेबी! दिखा तो ज़रा! यह जंगल जलेबी क्या चीज़ होती है।'' अमित ने अनीस के बैग से टिफिन बॉक्स निकालते हुए पूछा। उसकी आवाज़ जिनके कानों में पहुंची वे भी 'जंगल जलेबी' की रट लगा हंसने लगे। उदास अनीस भी मुस्कुरा पड़ा। टिफिन बॉक्स खुल चुका था उसमें दो पराठों का रोल रखा हुआ था आम के अचार की फांक के साथ। चीखते-चिल्लाते हंसते बच्चे जो 'जंगल जलेबी' 'जंगल जलेबी' दोहरा रहे थे, एकाएक चुप हो गए। सबने एक-दूसरे की तरफ सवालिया नज़रों से देखा और अपनी-अपनी जगहों पर लौट गए और लंच खाने में मस्त हो गए।

अमित ने अनीस के लंच बॉक्स से पराठा उठाया और अपने लंच से सैंडविच उठाकर उसके बॉक्स में रखा। दोनों चुपचाप लंच खाने में व्यस्त हो गए। जब पानी

पी चुके तो अनीस ने हाथ धोते हुए कहा, ''अमित मैं इस 'जंगल जलेबी' के पेड़ को हर हालत में देखकर रहूंगा।'' यह सुनकर अमित बोला, ''पेड़ तो देख ले, पेड़ देखने को मना किसने किया है?

''वह तो है मगर इस पेड़ का नाम कुछ *फनी* सा है। शायद मेरी मम्मी ने मुझे नई कहानी सुनाने के लिए ऐसा मज़ेदार नाम रख लिया हो?''

''तो चलें गूगल पर सर्च कर लेते हैं।'' अमित ने कहा तो अनीस का चेहरा खिल उठा, परन्तु दूसरे पल मुरझा गया।

''क्यों क्या हुआ?'' अमित ने ताज्जुब से पूछा, ''कुछ नहीं।'' अनीस ने कहा फिर बैग कंधे पर डाल क्लासरूम की तरफ बढ़ा। घन्टी बज उठी थी। फील्ड में फैली विद्यार्थियों की भीड़ छटने लगी थी।

''बॉटिनी के किसी अध्यापक से पूछा जा सकता है ...'' मन ही मन अनीस ने कहा और अपने को हल्का महसूस किया, मगर दूसरे क्षण वह उलझन में पड़ गया। यदि सर नाम सुनकर हंस पड़े और कोरी कल्पना कह बैठे या फिर वास्तव में ऐसा पेड़ मौजूद हो और उसका नाम कुछ और हुआ तो...? मां की 'जंगल जलेबी' का मज़ाक उड़े, यह मुझे अच्छा नहीं लगेगा। मगर अम्मा मुझे झूठमूठ की कहानी क्यों सुनाएंगी। उन्होंने उस फल को खाया है यदि खाया है तो फिर वह बेर, शहतूत, बेल, फालसा या फिर अमरख की तरह बाज़ार में बिकता क्यों नहीं है। सोचते-सोचते वह बुदबुदा उठा- जंगल जलेबी! जंगल जलेबी! मेरी सपनों की शहज़ादी, जंगल जलेबी! कहते-कहते अनीस के चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

रात को खाने की मेज़ पर अनीस के पापा ने अपनी पत्नी से पूछा, ''कामनी! अगले माह से अनीस और अरमान की छुट्टियां होने वाली हैं। मैं भी छुट्टी की अर्ज़ी दे चुका हूं, तुमने कुछ सोचा है कि कहां घूमने जाना है?''

''अम्मा के गांव।'' जल्दी से अनीस बोल उठा।

''मेरे गांव?'' मां चौंक पड़ी।

''वह भी इस गर्मी में?'' पापा हंस पड़े।

''मैं तो वाटर पार्क रिसॉर्ट जाऊंगा। आपने वायदा किया था।'' अरमान ने रूठ कर हाथ में पकड़ा कौर प्लेट में पटक दिया और हाथ सीने पर बांध कुर्सी की पीठ से कमर टिका ली।

''अरे अभी हम सलाह मशविरा कर रहे हैं, इसमें रूठने वाली कौन-सी बात है।'' मां ने हैरत से बेटे को देखा।

''अरमान! तुम्हारी मम्मी ठीक कह रही हैं पहले खाना खाओ।'' इतना कह पापा ने अरमान की प्लेट उसके आगे सरकाई। सब

खामोशी से खाना खाने लगे।

अनीस खाना खाने के बाद पढ़ने बैठ गया। होमवर्क पूरा कर उसने किताबें समेटी, लैम्प बुझाया और करवट बदल सोने की तैयारी करने लगा। आंखों में नींद नहीं थी मगर पढ़ने में भी दिल नहीं लग रहा था। उसका मन अनमना सा हो रहा था।

''अम्मा ने बचपन में जाने कितनी कहानियां सुनाई थीं जिनमें से कुछ याद हैं- कुछ भूल गया, मगर यह जंगल जलेबी वाली अम्मा की यादें जैसे मेरी यादें बन चुकी हैं। बार-बार एक ही सपना आता है और कहानी को नए सिरे से याद कराके चला जाता है। जब तक मैं यह पेड़ ढूंढ कर खुद अपनी आंखों से नहीं देख लेता हूं। मैं गूगल से इसकी जानकारी नहीं लूंगा क्योंकि मां की बातों पर जो मेरा अटल विश्वास है, उसमें दरार नहीं पड़ने दूंगा। यह सब सोचते-सोचते अनीस नींद में डूब गया। और फिर वही सपना सामने था। हरा-भरा पेड़ और उसकी छाया में नीचे पड़े फलों को चुनती एक लड़की... लहंगा व चुन्नी पहने हुए फल का स्वाद लेती हुई।

पापा आफिस के लिए तैयार हो चुके थे। नाश्ते की मेज़ पर जब वह पहुंचा तो वह नाश्ता करके उठ रहे थे। हाथ धोते हुए उन्होंने उसकी पढ़ाई के बारे में पूछा और बड़े प्यार से कहा, ''देखो अनीस! अब तुम नवीं कक्षा में पहुंच चुके हो। पढ़ाई को अब गंभीरता से लो समझे बेटा!''

''जी पापा!'' इतना कह कर उसने टोस्ट पर जैम लगाया, मां को नजर भर कर देखा जो अरमान का स्कूल बैग में किताबें रख रही थीं। दिल चाहा कि उनसे कहे, ''अम्मा! इस बार गांव ले चलो, चाहे दो ही दिन के लिए सही'' मगर ज़बान से कुछ बोला नहीं और चुपचाप नाश्ता करने लगा। तभी पापा ने कार की चाबी उठाते हुए कहा, 'अरे कामनी! मैं तुम्हें बताना भूल गया कि तुम्हारे बड़े चाचाजी का *मैसेज* आया था। उनके छोटे बेटे की शादी है और तुम्हें ख़ासतौर से बुलाया है। उन्हें फोन कर लो।''

''मैं गांव नहीं जाऊंगा'' अरमान ने गुस्से से कहा।

''तुम्हें भेज कौन रहा है। सिर्फ तुम्हारी अम्मा और अनीस जाएंगे क्योंकि उन्हीं दिनों तुम्हारे बड़े अब्बा ईलाज के लिए मुम्बई आ रहे हैं। उनके साथ तुम्हारी फूफी भी आ रही हैं।'' इतना कह कर उन्होंने अरमान का हाथ पकड़ा और दरवाज़े की तरफ बढ़े। उनके पीछे अनीस भी चल पड़ा।

ट्रेन में बैठे वे दोनों जब गांव की तरफ जा रहे थे तो भागते दृश्यों को देखते हुए अचानक अनीस पूछ बैठा, 'ए अम्मा! हमको आप वह पेड़ दिखाएंगी न?'

''कौन-सा पेड़?''

''वही जंगल जलेबी वाला पेड़ जिसमें हरे सफेद से खुशबूदार फूल निकलते थे और बाद में वह लाल-हरे, मीठे-कड़वे फल बन जाते थे जिन्हें आप चाव से खाती थीं ... याद आया अम्मा।''

''मैं अपना बचपन कैसे भूल सकती हूं पगले!'' मां की आंखें तरल हो उठीं फिर हंस कर बोली, ''तुझे कैसे याद रहा।''

''मेरे सपने में आता है कभी-कभी ...'' अनीस हंसा तो मां ने उसे गौर से देखा और धीमे से बोली, 'मेरे भी।'

ट्रेन भाग रही थी। मां सो गई वह भी ऊंघ गया।

अचानक शोर से आंख खुली। देखा सुबह के सूरज की लालिमा फूट चुकी थी। लोग अपना सामान समेट रहे हैं और अम्मा खिड़की से बाहर झांक रही है, एकाएक चहक कर बोली, ''अनीस, देखो ... देखो यह सारे पेड़ जंगल जलेबी के हैं, खूब कस के फला है।''

तभी पीछे से किसी ने कहा, ''अरे एका सिंगड़ी कहत है।'' यात्री ट्रेन से उतरने लगे। उन दोनों को लेने आए रिश्तेदार सलाम करके सामान उठाने लगे। अनीस की नज़रें तो बस पेड़ों पर जमीं थीं जिन पर चिड़ियों के झुंड के झुंड

चहचहा रहे थे। छोटे से स्टेशन से बाहर निकल कर सब रिक्शे पर बैठे तो अनीस बोला। ''अम्मा अपना मोबाइल देना'' और इतना कह उसने रिक्शे वाले को रुकने को कहा और रिक्शे से कूदा, फिर झपट उन वृक्षों की कई तस्वीरें खींची और दौड़ता हुआ जाकर पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। ऊपर से कई जंगल जलेबियां एक साथ उसके सर व कन्धे पर गिरीं जिन्हें उसने झुक कर रूमाल में समेटा और भागता हुआ रिक्शे पर चढ़ कर बोला, ''लो अम्मा चखो ... साथ-साथ खाते हैं।''

झटपट उसने अमित को तस्वीरें भेजीं और जंगल जलेबी को खाते हुए मां और अपनी सेल्फी भी ली। अभी कुछ पल ही गुज़रे थे कि गूगूल से ली सूचना का लिंक अमित ने उसको भेज दिया। लिखा था, 'जंगल जलेबी का वृक्ष नेटिव मैक्सिको व सेन्ट्रल अमरीका, बंगलादेश, श्रीलंका, सेंट्रल उत्तर प्रदेश, फिलिपीन, फेलोरीडा व केरोबियन में भी पाया जाता है जिसकी ऊंचाई 30-50 फुट के अंदर होती है' 'सूखे में भी यह उगता है! गुजरात में इसको गोरस अम्बली, मराठी में फिरंगी चिन्च, बंगाल में जंगल जलेबी, अंग्रेजी में मद्रास थ्रान कहते हैं। हिंदुस्तानियों द्वारा 1960 में यह कुवैत ले जाया गया जहां इसको 'शौकत थ्रान' कहते हैं मगर यह पेड़ मद्रास में नहीं पाया जाता है। इसका तना, पत्तियां, बीज सभी कुछ दवा बनाने के काम में आते हैं।' यह सब पढ़ते-पढ़ते अनीस हंस पड़ा और मां को देखने लगा जिनके चेहरे पर बचपन का खोया स्वाद पाने की खुशी झलक रही थी। जिसे देखकर वह मन ही मन कह उठा।

''मेरी अम्मा! गलत हो ही नहीं सकती।'' ❑

–डी-37/754, छतरपुर पहाड़ी, एसएसएन मार्ग, नई दिल्ली-74

मिलकर पढ़ने जाएंगे

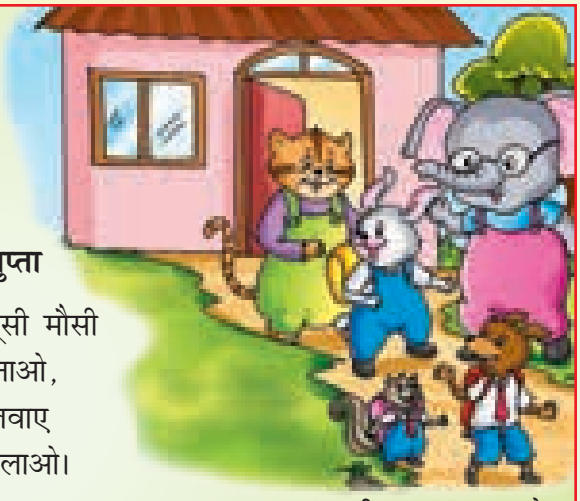

–मनमोहन गुप्ता

चींकू, बंटी सब आ जाओ
मिलकर पढ़ने जाएंगे,
मम्मी से ले आना खाना
आधी छुट्टी में खाएंगे।

पढ़-लिखकर होशियार बनेंगे
हम सब जंगल के बच्चे,
सारे जग को दिखला देंगे,
देखो हम कितने अच्छे।

अब जल्दी तुम पूसी मौसी
ड्रेस फटाफट पहनाओ,
दादा हाथी ने दिलवाए
वह मुझको मोजे लाओ।

आ गई वैन हमारी
बच्चों को अब लेने,
भारी-भरकम टंगा है बस्ता
इसके भी क्या कहने।

हम सब साथी इस कानन के
पढ़कर नाम कमाएंगे,
ज्ञान का सूरज उग आया है
सबको ये बतलाएंगे।

–एस.बी.के. गर्ल्स हा.सै. स्कूल के पास, मंडी अटलबंद, भरतपुर, राजस्थान-321001

राष्ट्रपिता गांधी

–अक्षय कुमार जैन

छज्जू भगत ने कहना शुरू किया, ''1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम कामयाब न हो सका। ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया ने कंपनी से हिंदुस्तान का शासन अपने हाथ में ले लिया। लोगों ने सोचा था कि अंग्रेज गए और इसीलिए उन्होंने उन्हें भगाने के लिए पूरा सहयोग दिया था, लेकिन उनकी पकड़ और तेज हो गई। पुलिस के अत्याचारों से लोग कांपने लगे।''

2 अक्तूबर, 1869 को भारत में एक ऐसे व्यक्ति ने जन्म लिया जिसने लोगों के हृदय से 'लाल टोपी' यानी पुलिस का भय दूर कर दिया। उस महापुरुष का नाम था मोहनदास करमचंद गांधी जिसे सारा संसार महात्मा गांधी के नाम से जानता है और भारत के लोग जिसे 'बापू' कहते हैं।

गांधीजी जब बैरिस्टर बनकर वकालत करने लगे तो उन्हें एक मुकदमे के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। वहां गोरे लोग काले लोगों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते थे। गांधीजी को यह बात अच्छी न लगी। उन्होंने विरोध करने का निश्चय किया और सत्य तथा न्याय की रक्षा के लिए वह डट गए। उन्होंने अपनी तरह के बहुत से कार्यकर्ताओं को तैयार किया और सत्याग्रह के अस्त्र को ईजाद किया। लेकिन उनके मन पर एक बात पत्थर की लकीर की तरह खिंच गई कि जब तक भारत गुलाम रहेगा तब तक दुनिया में भारतीयों का आदर नहीं हो सकता। उन्होंने गुलामी की जंजीर तोड़ने का फैसला किया। वह दक्षिण अफ्रीका से भारत आए और उन्होंने आज़ादी के लिए काम करना शुरू किया।

भारत में कांग्रेस नाम की राष्ट्रीय संस्था 1885 से ही काम कर रही थी। उस समय कांग्रेस केवल प्रस्ताव ही पास करती थी। पर धीरे-धीरे इस संस्था का स्वरूप बदला। लोकमान्य तिलक ऐसे नेता हुए जिन्होंने आज़ादी की बात उठाई। गांधीजी ने कांग्रेस की आवाज़ को गांव-गांव तक पहुंचा दिया। गांवों के लोगों ने गांधीजी को अपना मसीहा माना और जब गांधीजी ने धोती पहन ली तब वह गांधी बाबा अथवा महात्माजी के नाम से सारे देश में जाने-जाने लगे।

धोती पहनने की भी एक रोचक घटना है। गांधीजी कांग्रेस का संदेश घर-घर पहुंचाने के लिए गांवों की यात्रा कर रहे थे। एक बुढ़िया बापू से मिलने आई। उसके कपड़े बहुत मैले थे। गांधीजी ने

उससे कहा माई धोती तो धो लिया कर। मैले कपड़े नहीं पहनने चाहिए।

बुढ़िया ने रुआंसी होकर कहा, ''बापू जब एक ही धोती हो तब धोऊं कैसे? अगर धोने लगूं तो पहनूं क्या?''

गांधीजी यह सुनकर दंग रह गए। उन्होंने सोचा कि जिस देश में गरीबी इस सीमा तक बढ़ी हुई हो कि लोगों के पास इतने कपड़े न हों कि वे बदल भी सकें, उस देश के कार्यकर्ता को तड़क-भड़क से नहीं रहना चाहिए। इसके बाद गांधीजी ने धोती कुर्ता और टोपी पहनना छोड़ दिया और एक धोती पहनकर रहने लगे। उनकी धोती भी घुटने के ऊपर तक ही होती थी।

गांधीजी ने कपड़े की कमी को दूर करने और अपनी जरूरत का कपड़ा खुद बनाने के लिए चर्खा आंदोलन चलाया और गांव-गांव में लोगों को सूत कातने की प्रेरणा दी। फिर क्या था, देश भर के गांवों में चर्खे का गीत गूंजने लगा और लोग गाने लगे।

मेरा टूटे न चरखे का तार
चरखवा चालू रहे

खद्दर पहनने, सूत कातने और अपने ही देश में हाथ करघों पर जुलाहों का बनाया कपड़ा पहनने के आंदोलन ने अंग्रेजों को परेशान कर दिया। लोगों में स्वदेशी वस्तुओं के प्रति अनुराग बढ़ा। फिर क्या था विदेशी कपड़ों की होलियां जलाई गईं।

गांधीजी ने अस्पृश्य कहकर पुकारे जाने वाले लोगों को हरिजन कहा। वह स्वयं हरिजनों की बस्ती में जाते थे और अक्सर वहीं ठहरा भी करते थे। गांधीजी उन्हें सफाई की शिक्षा देते और उनमें यह भावना पैदा करते कि न कोई छोटा है और न बड़ा, सभी ईश्वर के पुत्र हैं। गांधीजी की देखा-देखी सभी लोग हरिजनों के कल्याण की बात सोचने लगे। आज के भारत में हरिजनों की भलाई के लिए बहुत से काम हो रहे हैं। उनमें भी जागृति आई है। वे पढ़ने-लिखने लगे हैं और अपने बच्चों को ऊंची शिक्षा दिलाते हैं।

गांधीजी ने शराब के विरोध में आवाज़ उठाई और धरना दिया। उन्होंने लोगों से कहा कि शराब पीना बुरा है। इससे स्वास्थ्य तो खराब होता ही है, पैसे की बरबादी भी होती है। जो पैसा शराब पीने पर खर्च किया जाता है वही बच्चों को पढ़ाने, कपड़े आदि तथा अच्छे कामों पर खर्च किया जा सकता है। गांधीजी ने महिलाओं की उन्नति के लिए काम किया और उन्हें बराबरी का दर्जा दिलाने का प्रयत्न किया। गांधीजी ने अहमदाबाद के निकट साबरमती नदी के किनारे आश्रम बनाया। इस आश्रम में रहने वाले लोग सब काम खुद करते थे। यहां तक कि मल-मूत्र

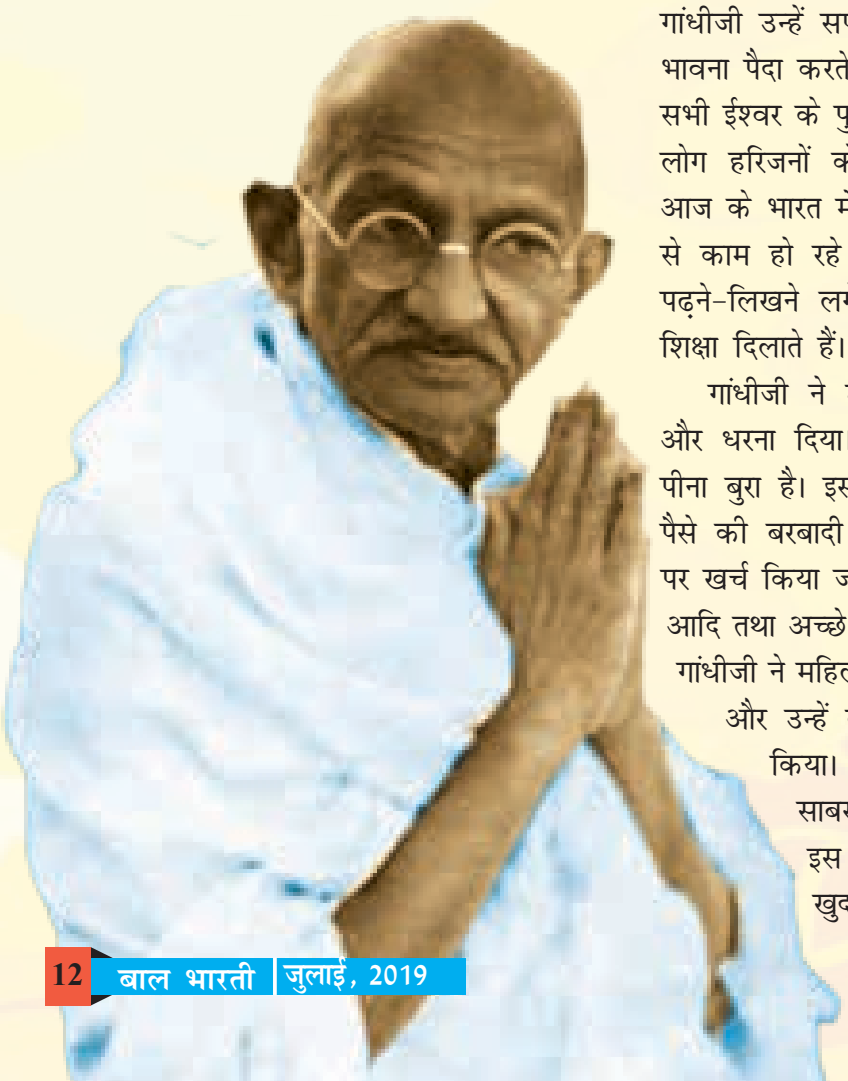

भी स्वयं उठाते थे। गांधीजी स्वयं भी यह काम करते थे। गांधीजी समय का बहुत पालन करते थे और छोटी से छोटी वस्तु को बेकार नहीं जाने देते थे।

गांधीजी ने सोए हुए देश को जगा दिया। उनके आंदोलनों से राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जागृति आई। जैसे-जैसे जनता उठी, अंग्रेज सरकार के अत्याचार भी बढ़ने लगे। पर अत्याचार का अंत एक दिन होता ही है। 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हुआ। अंग्रेज यहां से चले गए, पर जाते-जाते भी उन्होंने देश को दो टुकड़ों में बांट दिया। गांधीजी को यह पसंद न थी पर उन्होंने देश के नेताओं की बात मान ली। देश के बंटवारे के बाद पाकिस्तान से लाखों व्यक्ति शरणार्थी बनकर भारत आए। पूर्वी पाकिस्तान में जो अब बांग्लादेश बन चुका है, अल्पसंख्यकों पर अत्याचार हुए। गांधीजी नंगे पैर नोआखाली पहुंचे, तब शांति हुई। भारत में भी प्रतिक्रियास्वरूप सांप्रदायिक दंगे हुए। गांधीजी ने उसकी भी निंदा की और उनका दिल रो पड़ा। यह चल ही रहा था कि नाथू राम गोडसे ने 30 जनवरी, 1948 को जब वह प्रार्थना सभा में जा रहे थे, उनके सीने में रिवाल्वर से तीन गोलियां मारीं। गांधीजी 'हरे राम' कहते हुए भूमि पर गिर पड़े। अंत समय में राम का नाम ही उनकी जुबान पर था। वह भारत में राम-राज्य की स्थापना करना चाहते थे।

उनकी मृत्यु का समाचार सारे देश में पीड़ा के साथ सुना गया। दिल्ली में तो उस दिन मातम छा गया। दुनिया के नेताओं ने कहा, 'महामानव चला गया। शांति का मसीहा उठ गया।'

देश एक प्रकार से अनाथ हो गया। देश की जनता ने उन्हें राष्ट्रपिता कहा और दिल्ली में राजघाट पर गांधीजी की समाधि बनाई गई।

महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों के कारण ही तो भारत भारत है।'' ❑

–प्रकाशन विभाग की पुस्तक
'कहानियां बलिदान की' से साभार

मेरी प्यारी दादी

—मनीषा

मेरी प्यारी दादी मां,

सादर प्रणाम।

आशा है स्वस्थ और कुशल होंगी। हम सब भी यहां कुशलपूर्वक है; स्कूल खुल गए हैं।

गर्मी की छुट्टियां खत्म होते ही, पढ़ाई का दबाव गहराने लगता है। आपको और हमको मालूम है कि स्कूल खुलते ही मम्मी हर वक्त हमको पढ़ने की हिदायतें देने लगती हैं। उधर स्कूल में टीचर का गुस्सा झेलते-झेलते थक जाते हैं। मैं ही नहीं भइया को भी रोज डांट पड़ती है। कभी वक्त पर होमवर्क ना करने के लिए तो कभी ट्यूशन वाले सर से। पहले मैं और मेरी दोस्त रुचि दोनों सोचते थे, काश हमें पढ़ाई न करनी पड़ती। स्कूल भी ना जाते, न ही मम्मी का डांट सुननी पड़ती। लेकिन अब हम समझ चुके हैं कि अच्छे बच्चे वही हैं, जो मन लगा कर सब काम करते हैं। साथ ही यह भी कि बिना पढ़े सपने पूरे नहीं हो सकते। भइया ने भी कंप्यूटर गेम खेलना बंद कर दिया है। वह अब इतवार को बस एक घंटे *गेम* खेलता है। पापा ने उसको समझाया कि कंप्यूटर में उसकी रुचि है तो वह विज्ञान में मन लगाए। ताकि आगे इंजीनियर बन सके। हां, प्रतिदिन शाम को हम एक घंटा मित्रों के साथ पार्क में खेलते हैं।

दादी हमने अपनी गर्मी की छुट्टियों में आपके और दद्दू के साथ जो मौज-मस्ती की, वह भूलती नहीं है। हमने अपने फोटो दोस्तों को दिखाए। दद्दू ने कहा था, इस साल मैं और भइया यदि ढंग से पढ़ाई करेंगे तो वह हम सबको नैनीताल लेकर जाएंगे। इसलिए

हम दोनों पढ़ाई की जोरदार तैयारी में जुट चुके हैं। रोज-रोज होमवर्क करना बहुत बोरिंग लगता है। उस पर मेरी गणित की टीचर बिल्कुल अच्छी नहीं है। लेकिन मैंने भइया को बोल दिया है, मैं उसका प्रोजक्ट बनाने में मदद करूंगी। वह मुझको गणित के कठिन फार्मूले सिखा देगा।

पड़ोस वाले सक्सेना अंकल का बेटा टोनी भइया इस बार फौजी की यूनीफार्म पहन कर घर लौटे। उन्हें देख कर हम दोनों ने ठान लिया है कि हम भी सेना में जाएंगे। छोटे मामा ने कहा, इसके लिए खूब खेलो-कूदो, तंदुरुस्त रहो। दादी अब फौजी बनने के लिए यह तो हम करेंगे ही। जिससे आपका नाम भी होगा और देश की सेवा भी।

साथ ही हम दोनों हर शनिवार को अपने दोस्तों को एकत्र कर, महत्वपूर्ण जानकारियों और ताजा खबरों पर बातें करेंगे। जो जिस विषय में कमजोर है या पिछड़ रहा है, वह दूसरे की मदद लेगा। दादी हम समझ गए हैं कि पढ़ाई करके ही आगे बढ़ा जा सकता है। हमको अपने और आप सबके सपनों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करनी है। ढंग से पढ़कर ही हम कोई मुकाम पा सकते हैं। मेरे स्कूल की आया आंटी ने हमें बताया था कि उनकी बेटी हमारे स्कूल में टीचर बन कर आ रही है। मैंने पापा को बताया तो उन्होंने कहा कि कड़ी मेहनत का नतीजा हमेशा अच्छा ही होता है। पिछले सालों में हमने जो भी लापरवाही की थी, उससे अब तौबा कर चुके हैं। हमें सबक भी मिल चुका है उसका।

घर में काम करने वाली रन्नो चाची ने बताया, उनकी बिटिया स्कूल नहीं जाती, इसलिए उसे काम पर लगाने की सोच रही हैं। मम्मी उनको समझा रहीं थीं कि थोड़ा डांट कर, धमका कर उसे स्कूल भेजा करो। उसे पढ़ने दो वरना वह भी झाड़ू-बर्तन ही करती रहेगी। सचमुच दादी, पढ़ाई कितनी जरूरी होती है। जब हम छोटे होते हैं, तो किताबें डरावनी लगतीं हैं। स्कूल जाने के नाम से ही चिढ़ आती है।

दादी आपको मालूम है कि कभी-कभी स्कूल में बहुत गृहकार्य दे दिया जाता है। थक कर आने के बाद बिल्कुल मन नहीं करता स्कूल का बस्ता देखने को। मम्मी कहती है, थोड़ी देर टीवी देखने के बाद उसे कर डालो। शाम को हमें पार्क भी जाना होता है। अब हम दोस्तों ने तय कर लिया है कि हम होमवर्क बिना खत्म किए खेलने वाले को सजा देंगे। ऐसे हमारा काम भी पूरा हो जाएगा और प्रतिस्पर्धा के चलते उत्साह भी बना रहेगा। भइया और मैंने लंबी कूद व दौड़ में अपना नाम दर्ज करवा दिया है। उसकी भी तैयारी करनी है। हमने मोबाइल

गेम और सोशल साइटों के लिए समय तय कर लिया है। रात के खाने के बाद का आधा घंटा। इसके बाद मम्मी हेडमास्टरनी की तरह मोबाइल जब्त कर लेती हैं। कभी-कभार बुरा भी लगता है। भइया तो चोरी से थोड़ी देर फेसबुक देख भी लेता है। मगर बेहतर भविष्य और सपनों को साकार करने की जिद याद दिलाते ही, वह बिस्तर पर जा लेटता है।

यह सब काफी कठिन है, पर हम कोशिश कर रहे हैं। आप और दद्दू भी पढ़ाई के महत्व पर अपनी हिदायतें हमेशा की तरह देती रहिए। जब हम फोन करें तब भी और जब चिट्ठी लिखें, तब भी।

दद्दू को मेरे और भइया की तरफ से नमस्ते बोलिएगा। ❑

आपकी

छुटकी समृद्धि

–ग्रेटर नोएडा, जीपी नगर, उ.प्र.-201308

यात्रा वृत्तांत

गोरा साधु और उनका संग्रहालय

–सीताराम गुप्ता

पिछले दिनों हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत की जन्मस्थली व गांधीजी के चौदह दिवसीय प्रवासस्थल अनासक्ति आश्रम को देखने की तीव्र इच्छा के वशीभूत कौसानी जाना तय हुआ। दिल्ली से ड्राइविंग करते हुए सीधे कौसानी जा पहुंचे। कौसानी से बागेश्वर व बागेश्वर से नैनीताल होते हुए दिल्ली वापसी की। नैनीताल से दिल्ली के लिए प्रमुख रूप से दो रास्ते हैं। एक काठगोदाम व हलद्वानी होते हुए और दूसरा कालाढुंगी होते हुए। कालाढुंगी के रास्ते पर रामनगर रोड पर छोटी हल्द्वानी नामक स्थान है जहां पर एक छोटा-सा व्यवस्थित संग्रहालय है जिसका नाम है- जिम कॉर्बेट संग्रहालय। इसमें जिम कॉर्बेट के जीवन से संबंधित घटनाओं और वस्तुओं को अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया गया है। जिम कॉर्बेट के बारे में जानने पर ऐसा लगा कि हिंदी भाषा और साहित्य में फादर कामिल बुल्के का जो स्थान व सम्मान है कुछ वैसा ही स्थान व सम्मान पर्यावरण, प्रकृति व वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में जिम कॉर्बेट का है।

जिम कॉर्बेट एक महान शिकारी, पर्यावरण एवं प्रकृति प्रेमी, वन संरक्षक, कुशल छायाकार व प्रसिद्ध लेखक हुए हैं जिन्हें हिंदुस्तान व यहां के लोगों से अगाध प्रेम था। 25 जुलाई सन् 1875 में नैनीताल में पैदा हुए जिम कॉर्बेट का पूरा नाम कर्नल एडवर्ड जेम्स कार्बेट था। जिम कॉर्बेट की लोकप्रियता का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जिम कॉर्बेट कुमाऊं के पूरे पर्वतीय व तराई क्षेत्र के गांवों में कारपेट साहब के नाम से प्रसिद्ध थे। जिम कॉर्बेट इतने मिलनसार, सहृदय व मददगार थे कि लोग उन्हें गोरा साहब की बजाय गोरा साधु कह कर पुकारते थे। जिम कॉर्बेट के पिता का नाम क्रिस्टोफर विलियम कॉर्बेट व मां का नाम मैरी जेन कॉर्बेट था। क्रिस्टोफर विलियम कॉर्बेट का जन्म एक 11 सितंबर सन् 1822 को मेरठ में हुआ था। वे तत्कालीन भारतीय ब्रिटिश फौज में नौकरी करते थे। जिम कॉर्बेट की मां मैरी जेन का जन्म 12 मार्च सन् 1837 को कोलकाता में हुआ था।

मैरी जेन की क्रिस्टोफर

विलियम कॉर्बेट से दूसरी शादी थी। पहले पति से भी उनके दो लड़के और दो लड़कियां, कुल चार बच्चे थे। बाद में क्रिस्टोफर विलियम कॉर्बेट से शादी से पूर्व ही एक लड़की की हैज़े से मृत्यु हो गई थी। क्रिस्टोफर विलियम कॉर्बेट की भी मैरी जेन से दूसरी शादी थी और पहली शादी से उनके भी तीन बच्चे थे। सन् 1859 में मैरी और क्रिस्टोफर विलियम कॉर्बेट ने शादी कर ली। जिम अपने पिता की नौ संतानों में आठवें नंबर के थे। सौतेले भाई-बहनों को मिलाकर जिम के परिवार में पूरे बारह भाई-बहन थे। क्रिस्टोफर विलियम कॉर्बेट की बहन और उसके पति की एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाने के कारण उनके तीन बच्चों की परवरिश का दायित्व भी उन्होंने ही संभाला। इस तरह से घर में पंद्रह भाई-बहनों के बीच जिम का बचपन व्यतीत हुआ। पंद्रह भाई-बहनों में एक चार साल छोटे भाई आर्किवाल्ड को छोड़कर जिम घर में तेरह भाई-बहनों से छोटे अर्थात् चौदहवें स्थान पर थे।

छोटी हलद्वानी स्थित जिम कॉर्बेट संग्रहालय का प्रारंभ सन् 1965 में किया गया। संग्रहालय उसी घर में स्थित है जो जिम कॉर्बेट ने अपने रहने के लिए सन् 1922 में स्वयं बनवाया था। यह रिहायशी बंगला पत्थरों से निर्मित है जिन्हें चूने से जोड़ा गया है। इसके आसपास लगभग बाईस बीघा ज़मीन थी। यह जिम और उसकी बहन मैगी द्वारा शीतकालीन आवास के रूप में प्रयोग किया जाता था। जिम और मैगी दोनों अविवाहित थे और दोनों साथ रहते थे। गर्मियों मे ये लोग नैनीताल के अपने बंगले गर्नी हाउस में रहने के लिए चले जाते थे। ये भी विलक्षण संयोग है कि सन् 1947 में जहां भारत के स्वतंत्र होने पर अंग्रेज़ भारत छोड़ कर चले गए वहीं जिम और मैगी भी भारत छोड़ कर केन्या चले गए और चाहते हुए भी वापस लौट कर नहीं आ सके।

केन्या जाने से पहले जिम कॉर्बेट छोटी हल्द्वानी स्थित अपने इस बंगले को अपने मित्र बाबू चिरंजीलाल शाह को दो हज़ार रुपए में बेच गए थे। सन् 1965 में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन वन मंत्री चौधरी चरण सिंह के आग्रह पर जिम कॉर्बेट की याद में इसे संग्रहालय बनाने के लिए चिरंजीलाल शाह ने ये बंगला सरकार के जंगल विभाग को बेच दिया। संग्रहालय में जिम कॉर्बेट के जीवन से संबंधित कई अद्भुत वस्तुएं व चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। संग्रहालय में जिम द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली बैठने की कुर्सी, मेज़ व बेंत का बना सोफा आदि वस्तुएं प्रदर्शित हैं। काफी पुरानी हो जाने के कारण कई चीज़ें काफी जर्जर हालत में हैं। यहां रखी गई कुर्सी व मेज़ की एक विशेषता ये है कि इन्हें स्वयं जिम ने अपने हाथों से बनाया था। जिम बढ़ई का काम करने में भी रुचि रखते थे।

वहीं एक पालकी भी रखी है जिसका इस्तेमाल घर के सदस्यों

द्वारा नैनीताल आने-जाने के लिए किया जाता था लेकिन जिम ने कभी इसका इस्तेमाल नहीं किया। जिम द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले बर्तन जैसे गिलास व क्रॉकरी आदि भी वहां देखे जा सकते हैं। संग्रहालय में प्रदर्शित सबसे महत्वपूर्ण वस्तुएं हैं जिम के शिकार करने के हथियार और दूसरी सामग्री। शिकार संबंधी उनके कई महत्वपूर्ण चित्र भी संग्रहालय में प्रदर्शित हैं। जिम एक अत्यंत कुशल शिकारी थे लेकिन बाद में उन्होंने बंदूक से शिकार करना छोड़ दिया था और कैमरे से शूट करना प्रारंभ कर दिया था। बदलती परिस्थितियों में कुमाऊं व गढ़वाल क्षेत्र में अनेक शेर व तेंदुए नरभक्षी हो गए जिन्होंने कई हज़ार ग्रामीणों और असंख्य मवेशियों को मार डाला। इनका सफाया करना जरूरी था। शिकार करना छोड़ने के बावजूद लोगों को इन आदमख़ोर शेरों व तेंदुओं के आतंक से मुक्ति दिलवाने के लिए जिम कॉर्बेट को फिर से बंदूक उठाने के लिए विवश होना पड़ा।

जिम कॉर्बेट नौकरी के सिलसिले में नैनीताल अथवा कालाढुंगी से बाहर होते तो भी इन आदमख़ोरों को मारने के लिए जिम कॉर्बेट को ही बुलाया जाता था क्योंकि अन्य शिकारी उन्हें मार ही नहीं पाते थे। ऐसे कई दुर्दांत आदमख़ोर शेरों व तेंदुओं के शिकार के साथ उनके चित्र व महत्त्वपूर्ण जानकारियां संग्रहालय में देखी जा सकती हैं। कई अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज़ भी संग्रहालय में मौजूद हैं। संग्रहालय में जिम कॉर्बेट की दो मूर्तियां भी लगी हैं। एक बाहर लॉन में लगी हुई है तो दूसरी बंगले के बरामदे में। कुल मिलाकर संग्रहालय से जिम कॉर्बेट साहब के बारे में अच्छी-ख़ासी जानकारी मिल जाती है जो उन्हें समझने के लिए ही नहीं अपितु वर्तमान

परिस्थितियों में पर्यावरण व वन्यजीव संरक्षण की आवश्यकता को समझने के लिए भी अनिवार्य व उपयोगी हैं। छोटी हल्द्वानी स्थित जिम कॉर्बेट संग्रहालय में एक छोटी सी सोविनियर शॉप भी है जहां जिम कॉर्बेट की लिखी पुस्तकें भी उपलब्ध हैं।

जिम कॉर्बेट एक कुशल शिकारी के साथ-साथ अच्छे लेखक भी थे जिनकी कई पुस्तकें बहुत ही प्रसिद्ध हुई हैं। इस संग्रहालय में भी उनकी कई पुस्तकें और उनसे संबंधित जानकारी प्रदर्शित की गई है। वह जितने कुशल आखेटक व छायाकार थे, उससे भी अधिक अच्छे शब्दकार थे। उनकी रचनाएं एक फिल्म की तरह पाठकों के मन में उतरती चली जाती हैं। वह चाहे किसी व्यक्ति के बारे में बात करें अथवा जंगली जानवरों के बारे में, उनके चरित्र सामने आ खड़े होने पर विवश हो जाते हैं। वह हिंदुस्तान और यहां के लोगों व परिवेश से बहुत अधिक प्यार करते थे। उनकी पुस्तक 'माय इंडिया' इस बात का प्रमाण है। उनकी पुस्तक 'जंगल लोर' जंगलों और उनमें निवास करने वाले जीव-जंतुओं की बेहतरीन जानकारी देने में सक्षम है। वह जंगलों की हर छोटी से छोटी आहट को पहचानने में सक्षम थे। जंगल के हर छोटे-बड़े जीव की गतिविधियों से परिचित थे। हर वनस्पति का उन्हें ज्ञान था। अपने क्षेत्र के हर पेड़ तक को पहचानते थे।

एक बेहतरीन शिकारी के तौर पर उन्होंने कुमाऊं व गढ़वाल क्षेत्र में जिन आदमख़ोर शेरों और तेंदुओं को मार गिराया इसकी विस्तृत जानकारी उनकी *मैनइटर्स ऑफ कुमाऊं, मैनइटर लैपर्ड ऑफ रुद्रप्रयाग, व द टैम्पल टाइगर एण्ड मोर मैनइटर्स ऑफ कुमाऊं* आदि पुस्तकों में मिलती है। उनकी पुस्तकों को पढ़ने से पता चलता है कि कालाढुंगी का जंगल ही उनका वास्तविक घर और प्रयोगशाला थी जहां उन्होंने हज़ारों रातें जंगली जानवरों के बीच व्यतीत कीं। जंगल का उनका ज्ञान पुस्तकीय नहीं व्यावहारिक था। उनके लेखन में ऐसी कशिश है कि जो भी उनकी पुस्तकें पढ़ना प्रारंभ करता है, बीच में नहीं छोड़ पाता। जिम अपने पाठकों को अपना दोस्त बना लेते हैं और उनके दिलो-दिमाग़ पर छा जाते हैं। जिम के बारे में और उनकी किताबों में दी गई जानकारी आप जितना पढ़ते हैं उतना ही अधिक और जानने की उत्सुकता पैदा हो जाती है। यह उनके व्यक्तित्व और लेखन का जादू ही है जो सर चढ़ कर बोलता है। उनकी

पुस्तक 'मैनइटर्स ऑफ कुमाऊं' पिछली शताब्दी की सबसे ज़्यादा बिकने वाली पुस्तकों में रही है।

जिम कॉर्बेट अपनी पुस्तक ''जंगल लोर'' में लिखते हैं : *प्रकृति में न तो कोई दुख होता है और न ही कोई अफ़सोस। झुंड में से कोई पक्षी बाज़ का शिकार बन जाता है अथवा कोई चौपाया शेर या तेंदुए का शिकार हो जाता है, तो बाकी बचे हुए पक्षी और जानवर इस बात की खुशी मनाते हैं कि चलो आज हमारा वक्त नहीं आया। उन्हें आने वाले कल का भी कोई अहसास नहीं होता। जब मैं नादान था तब नन्हे पक्षियों और हिरणशावकों को बाजों, चीलों व दूसरे जानवरों के पंजों से छुड़ाने की कोशिश करता था लेकिन जल्दी ही मुझे पता चल गया कि एक की जान बचाने से दो की जान जाती है। शिकारी पक्षियों अथवा जानवरों के ज़हरीले पंजों की वजह से उनमें से एक प्रतिशत पक्षी अथवा दूसरे नन्हे जानवर ही जीवित रह पाते थे। दूसरी ओर शिकारी जानवर अपना अथवा अपने बच्चों का पेट भरने के लिए फौरन ही दूसरा शिकार कर लेता था। जंगल में कुछ पक्षियों और जानवरों का उत्तरदायित्व प्रकृति में संतुलन बनाए रखने का होता है जिसके लिए प्रकृति में संतुलन बनाए रखने के साथ-साथ अपना पेट भरने के लिए शिकार करना भी अनिवार्य हो जाता है।*

छोटी हल्द्वानी स्थित जिम कॉर्बेट संग्रहालय के अतिरिक्त एक और जिम कॉर्बेट संग्रहालय भी है जो नैनीताल में स्थित है। नैनीताल स्थित गर्नी हाउस जिम कॉर्बेट का ग्रीष्मकालीन आवास स्थल था। ये उनका पैतृक घर था। ये लोग गर्मियां नैनीताल के गर्नी हाउस में व्यतीत करते थे तो सर्दियां कालाढुंगी में। सन् 1871 में जिम की मां मैरी जेन ने 1.7 एकड़ ज़मीन ख़रीद कर सन् 1881 में इस पर एक कॉटेज बनवाया था जो पारंपरिक ब्रिटिश शैली के कंट्री हाउस जैसा बना हुआ है। जिम और उनकी बहन मैगी केन्या जाने तक कालाढुंगी की तरह ही सन् 1947 तक यहां भी रहे। केन्या जाते समय उन्होंने इसे शारदा प्रसाद वर्मा को बेच दिया। वर्तमान में इसका स्वामित्व नीलांजना डालमिया के पास है जो शारदा प्रसाद वर्मा की रिश्तेदार ही हैं।

उन्होंने न केवल इस कॉटेज को इसके मूल स्वरूप में सुरक्षित व अक्षुण्ण रखा है अपितु जिम कॉर्बेट की वस्तुओं को भी अच्छी तरह से सहेज कर रखा है। ये पूर्णत: निजी संपत्ति है लेकिन इसे संग्रहालय के रूप में संरक्षित किया गया है और कोई भी व्यक्ति पूर्व अनुमति लेकर वहां जा सकता है और संग्रहालय को देख सकता है। यहां पर गर्नी हाउस में भी जिम के निजी उपयोग की चीज़ें, उनकी ट्रॉफियां, फिशिंगरॉड, पुस्तकें, फर्नीचर व दूसरी चीज़ें देखी जा सकती हैं। मैगी का एक पियानो भी यहां रखा हुआ है। जब भी नैनीताल अथवा आगे के पहाड़ों पर जाने का कार्यक्रम बने कुछ समय गर्नी हाउस और कालाढुंगी संग्रहालय को देखने के लिए भी अवश्य निकालने का प्रयास कीजिएगा।

केन्या जाने के बाद जिम कॉर्बेट भारत वापस नहीं आ सके लेकिन वहां से भी जिम कॉर्बेट अपने गांव के निवासियों का हालचाल लेना नहीं भूलते थे। आसपास के लोग उनके केन्या जाने के बाद कई वर्षों तक बेसब्री से उनकी वापसी का इंतज़ार करते रहे। बाद में जिम कॉर्बेट ने छोटी हल्द्वानी गांव की अपनी सारी संपत्ति उन्ही लोगों को दान में दे दी। केन्या में 19 अप्रैल 1955 को जिम कॉर्बेट का देहावसान हो गया। छोटी हल्द्वानी गांव के लोग प्रतिवर्ष 25 जुलाई और 19 अप्रैल को अपने प्रिय 'कारपेट' साहब को अवश्य याद करते हैं और उनकी मूर्ति पर माल्यार्पण करते हैं। जिम कॉर्बेट संग्रहालय जिम कॉर्बेट के योगदान को रेखांकित करने व उनकी यादों को बनाए रखने के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में भी सहायक रहेगा। ❑

–ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

हाथी चले अस्पताल

–नवनीत कुमार गुप्ता

वैसे तो हाथी सबसे विशाल और शक्तिशाली जानवरों में से एक है। लेकिन उसे भी स्वास्थ्य संबंधी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हम बीमार होते हैं तो अस्पताल चले जाते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है हाथी अपना ईलाज कराने कहां जाते होंगे।

उत्तर प्रदेश वन विभाग ने हाल ही में एक गैर सरकारी संस्था नाम के साथ संयुक्त रूप से हाथियों के संरक्षण तथा देखभाल के लिए मथुरा में देश के पहले हाथी अस्पताल की स्थापना की है।

हाथियों का अस्पताल आमतौर पर हाथियों से जुड़ी सभी स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान करता है। हाथियों की स्वास्थ्य समस्या में आमतौर पर जोड़ों में दर्द की समस्या आम है। अधिकांश बंदी हाथी आर्थराइटिस से पीड़ित होते हैं। इसके अलावा एनकाइलॉसिस भी एक समस्या है जिसमें हड्डियां आपस में जुड़ जाती हैं। फिर उनमें बहुत सारे पुराने फोड़े भी दिखाई देते हैं जो धारदार वस्तुओं के उपयोग के कारण होते हैं। बंदी हाथियों के पैरों में विशेषतौर पर समस्याएं देखने को मिलती हैं। इसकी एक वजह उनका कोलतार से बनी सड़कों पर चलना है।

असल में धरती पर विचरण करने वाला सबसे विशाल प्राणी हाथी है। एशियाई हाथियों का आकार

अफ्रीकी हाथियों से थोड़ा छोटा होता है। फिर भी एशियाई हाथियों को उनके छोटे और गोल कान से पहचाना जा सकता है। हाथियों की गिनती धरती के सबसे सामाजिक और बुद्धिमान प्राणियों में होती है। बीते सालों में आवास की कमी, इंसानों और वन्यजीवों में संघर्ष, और अवैध शिकार के कारण वर्षों से हाथियों की संख्या में लगातार कमी आती गई है। इसके कारण एशियाई हाथियों को विलुप्तप्राय प्राणियों की सूची में शामिल किया है। 2017 में हाथियों की गणना के अनुसार भारत में हथियों की आबादी लगभग 27,312 है, जो देश के 23 राज्यों में फैले हुए है। देश में हाथियों की सबसे अधिक संख्या कर्नाटक में हैं, जिसके बाद असम तथा केरल की बारी आती है। इस विशालकाय प्राणी को खतरों से बचाने उन्हें चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध कराने के लिए उत्तर प्रदेश के मथुरा में स्थापित हाथियों का अस्पताल लगभग 12,000 वर्ग फुट क्षेत्र में फैला है। यह अस्पताल शहर के बाहर है, ताकि हाथियों को टहलने, नहाने और प्राकृतिक वातावरण से अपना आहार तलाशने जैसी दैनिक गतिविधियों में आसानी हो। साथ ही, प्राकृतिक वातावरण होने के कारण उन्हें नए वातावरण परिवेश में अभ्यस्त होने में आसानी होती है। अस्पताल का निर्माण विशेष रूप से घायल या बीमार हाथियों के उपचार के लिए किया गया है। इसके अलावा हाथियों में विभिन्न बीमारियों और संक्रमण की पहचान करने के लिए अस्पताल के भीतर प्रयोगशाला का निर्माण किया गया है। अन्य चिकित्सकीय सुविधाओं में अस्पताल में लाने-ले जाने योग्य एक्स-रे मशीन, वजन करने की डिजिटल मशीन, पैरों की देखभाल के उपकरण, जल चिकित्सा के लिए जलाशय, लेजर थेरेपी, बंद उपचार क्षेत्र तथा काफी कुछ उपलब्ध हैं। अस्पताल में देश के किसी भी जगह से हाथियों को लाने के लिए एम्बुलेंस की सुविधा भी है। देखभाल केंद्र और

अस्पताल में चौबीसों घंटे इस विशालकाय प्राणी की सेवा के लिए प्रशिक्षित चिकित्सकों और कर्मचारियों की टीम रहती है।

इस अस्पताल तथा देखभाल केंद्र में करीब 22 हाथी हैं, जिन्हें देश के अलग-अलग हिस्सों से कैद से छुड़ाया गया है। अस्पताल में हाथियों की विभिन्न आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता है, चाहे उनका आहार हो या उनके व्यवहार को समझना हो, कई हाथियों को मजदूरी करने जैसी कठिन परिस्थितियों और धार्मिक स्थलों में बंधे होने की पुरानी परम्पराओं से मुक्त कराया गया है। ऐसी परिस्थितियों में रह चुके हाथी अवसाद में होते हैं और पर्याप्त आहार न मिलने के कारण शारीरिक रूप से भी दुर्बल होते हैं। अक्सर ऐसे हाथी घाव तथा संक्रमण से भी पीड़ित होते हैं। अस्पताल में हर हाथी के लिए एक विशेष प्रशिक्षक होता है, जो उसके बेहतर इलाज के लिए उसके व्यवहार को समझता है। इसके अलावा अस्पताल में विशेष प्रशिक्षकों के ज़रिए आम लोगों को देश में वन्य पशुओं की स्थिति के बारे में जानकारी तथा जागरूकता प्रदान की जाती है। यह अस्पताल अपने आप में एक नई पहल है, जो देश में विलुप्तप्राय हाथियों के उपचार, देखरेख तथा संरक्षण के लिए समर्पित है। ❑

–विज्ञान प्रसार, पृथ्वी मंत्रालय भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

छोटा जादूगर

–शंकर लाल माहेश्वरी

पात्र परिचय :
वाचक और लेखक स्वयं
लेखक की पत्नी
छोटा जादूगर-छोटा लड़का

वाचक: मैदान में बिजली जगमगा रही थी। अनेक पंडाल लगे थे। हंसी और विनोद के स्वर गूंज रहे थे। मैं (लेखक) खड़ा था उस छोटे फव्वारे के पास। वहां एक लड़का चुपचाप शर्बत पीने वालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुर्ते के ऊपर एक मोटी सी सूत की रस्सी पड़ी थी। उसकी जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। न जाने क्यों मैं (लेखक) आकर्षित हुआ।

छोटा जादूगर: क्यों जी! तुमने यहां क्या देखा?

लेखक: मैंने सब देखा है। यहां चूड़ी फेंकते हैं, खिलौने पर निशाना लगाते हैं। तीर से नंबर छेदते हैं। मुझे तो खिलौनों पर निशाना अच्छा मालूम हुआ।

छोटा जादूगर: जादूगर तो बिल्कुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं दिखा सकता हूं।

लेखक: उस पर्दे में क्या है? यहां तुम गए थे?

छोटा जादूगर: नहीं, मैं वहां नहीं जा सका। टिकट लगता है।

लेखक: तो चलो मैं वहां पर तुमको ले चलूं।

छोटा जादूगर: वहां जाकर

क्या कीजिएगा? चलिए निशाना लगाया जाए।

लेखक: तो फिर चलो पहले शर्बत पी लिया जाए।

वाचक: उसने स्वीकार सूचक सिर हिलाया दोनों शर्बत पीकर निशाना लगाने चले। रास्ते में लेखक ने पूछा।

लेखक: तुम्हारे घर में और कौन हैं?

छोटा जादूगर: मां और बाबूजी।

लेखक: उन्होंने तुम्हें यहां आने के लिए मना नहीं किया?

छोटा जादूगर: बाबूजी जेल में हैं।

लेखक: क्यों?

छोटा जादूगर: देश के लिए।

लेखक: और तुम्हारी मां?

छोटा जादूगर: वह बीमार है।

लेखक: और तुम तमाशा देख रहे हो।

छोटा जादूगर: तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूं। कुछ पैसे ले जाऊंगा तो मां को पथ्य दूंगा। मुझे आपने शर्बत न पिलाकर मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती। मैं सच कहता हूं बाबूजी! मां बीमार हैं, इसलिए मैं नहीं गया।

लेखक: कहां?

छोटा जादूगर: जेल में, जब कुछ लोग तमाशा देखते ही हैं तो मैं भी क्यों न तमाशा दिखाकर मां की दवा करूं और अपना पेट भी भरूं?

लेखक: अच्छा चलो निशाना लगाया जाए।

वाचक: वह निकला पक्का निशानेबाज, उसका कोई तीर खाली नहीं गया। देखने वाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया लेकिन उन्हें उठाता कैसे? कुछ मैंने रूमाल में बांधे और कुछ अपनी जेब में रख लिए।

छोटा जादूगर: बाबूजी! आपको तमाशा दिखाऊंगा। बाहर आइये। मैं चलता हूं।

वाचक: छोटा जादूगर नौ दो ग्यारह हो गया। अकस्मात किसी ने ऊपर के हिण्डोले से पुकारा।

छोटा जादूगर: बाबूजी?

लेखक: कौन?

छोटा जादूगर: मैं हूं छोटा जादूगर।

वाचक: कोलकाता के एक बाग में लेखक अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ था। इतने ही में छोटा जादूगर दिखाई पड़ा, मस्तानी चाल से झूमता हुआ।

छोटा जादूगर: बाबूजी नमस्ते! आज कहिए तो खेल दिखाऊं।

लेखक की पत्नी: दिखाओ जी, भला कुछ मन तो बहले।

वाचक: छोटा जादूगर ने खेल प्रारंभ किया। उस दिन के सब खिलौने उसके खेलने में अपना अभिनय करने लगे। बिल्ली रूठने लगी। भालू मनाने लगा। बंदर घुड़कने लगा। गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। जादूगर की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था। ताश के सब पत्ते लाल हो गए फिर सब काले हो गए। गले की सूत की डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर फिर एक हो गई, लट्टू अपने से नाच रहे थे।

लेखक: अब हो चुका अपना खेल बटोर लो। हम लोग भी अब जाएंगे।

लेखक की पत्नी ने उसे एक रुपया दिया वह उछल पड़ा।

लेखक: लड़के!

छोटा जादूगर: छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।

पत्नी: अच्छा तुम इस रुपये से क्या करोगे?

छोटा जादूगर: पहले भरपेट पकौड़ा खाऊंगा। फिर एक सूती कंबल लूंगा।

वाचक: छोटा जादूगर नमस्कार करके चला गया। संध्या समय लेखक और उसकी पत्नी धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर जा रहे थे। रह-रहकर छोटा जादूगर याद आ रहा था। सचमुच वह एक झोंपड़ी के पास कंधे पर कंबल

डाले खड़ा था। लेखक ने मोटर रोककर पूछा।

लेखक: तुम यहां कहां?

छोटा जादूगर: मेरी मां सही हैं न। अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।

वाचक: मैंने नीचे उतरकर झोंपड़ी में देखा, एक स्त्री चिथड़ों में लदी कांप रही थी। छोटे जादूगर ने कंबल उसके ऊपर डालकर उसके शरीर से चिपटते हुए कहा : मां!

वाचक: लेखक की आंखों से आंसू निकल पड़े। बड़े दिनों की छुट्टियां बीत चुकी थीं। उस छोटे जादूगर को फिर से देखने की इच्छा लेखक को हुई। दस बज चुके थे। लेखक ने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे पर छोटा जादूगर का मंच सजा था। कार रोककर लेखक उतर गए और देखा कि बिल्ली रूठ रही थी, भालू मनाने चला था, विवाह की तैयारी थी। वह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की ताज़गी नहीं थी। जब वह औरों को हंसाने की चेष्ठा करता तो जैसे स्वयं कांप जाता था मानो उसके रोयें रो रहे थे। लेखक आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोर कर उसने भीड़ में लेखक को देखा। लेखक ने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा।

लेखक: (आश्चर्य से) आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?

छोटा जादूगर: मां ने कहा है कि आज तुरंत चले आना। मेरी घड़ी समीप है।

लेखक: (क्रोध से) तब भी तुम खेल दिखाने चले आए?

छोटा जादूगर: जल्दी चलो।

वाचक: कुछ ही मिनटों में वे झोंपड़ी के पास पहुंचे। छोटा जादूगर दौड़कर ''मां... मां... कहकर झोंपड़ी में घुसा। उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गए। जादूगर उससे लिपटकर रो रहा था।

लेखक स्तब्ध खड़ा था।❑

–(जय शंकर प्रसाद द्वारा लिखित प्रसिद्ध कहानी 'छोटा जादूगर' का नाट्य रूपांतर)

पोस्ट-आगूचा, जिला-भीलवाड़ा, राजस्थान-311022

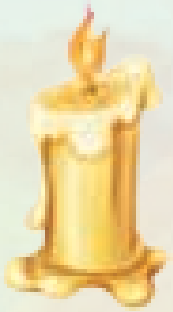

लड़की मोमबत्ती वाली

–सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'

एक बार की बात है। नार्वे में महामारी फैली थी, जिसे प्लेग कहते हैं। प्लेग चूहे से फैलती है। ऐसी भयंकर बीमारी जिधर देखो उधर लोग परेशान रहते थे। बहुत बड़ी संख्या में लोग मर रहे थे। एक लड़की थी सोनिया, जिसकी दादी, दादा और पिता प्लेग का शिकार हुए और चल बसे। उसके पिता नाविक थे। इसलिए जो भी जहाज ओस्लो बंदरगाह के तट पर रुकता तब सोनिया वहां मोमबत्तियां बेचने पहुंच जाती थी।

सोनिया को पूरा विश्वास था कि जब लोग उसकी मोमबत्तियां लेने आएंगे और अवश्य ही जहाज पर जलाएंगे जिससे उसके पिता, दादी और दादा की आत्मा को शांति मिलेगी। दस वर्षीय सोनिया हांक लगाती, आवाज़ लगाती ''लड़की मोमबत्ती वाली। मोमबत्ती ले लो। मोमबत्ती दूर करे अंधियारा।''

सोनिया की मधुर आवाज सुनकर लोग उसकी मोमबत्तियां खरीद लेते थे। देखते ही देखते उसकी सारी मोमबत्तियां बिक जाती।

सोनिया को मोमबत्ती बेचने से जो आमदनी होती उसे वह पादरी को दे देती थी। पादरी बदले में उसे बहुत दुआओं के साथ बकरी के दूध का पनीर तथा सूखी मछलियां भी देता था, जिसे वह अपनी बीमार मां को देती थी। सोनिया दोनों घुटने झुकाकर पादरी को धन्यवाद देती। उसकी मां कहती, ''बेटी मैं तेरी मां हूं। मुझे तेरी सेवा करनी चाहिए। उलटा तुम मेरी सेवा कर रही हो।'' उसकी मां धीरे-धीरे कमजोर हो गई। बीमारी ने उसकी मां की कमर तोड़ दी थी।

एक दिन जब सोनिया मोमबत्तियां बेचकर घर वापस आई तो देखा कि उसके घर पर लोगों की भीड़ लगी हुई है। जब वह मां के पास गई तो मां की आंखें बंद थीं। वह शांत लेटी थी। उसके दाहिने हाथ में मोमबत्ती थी। सोनिया मां को हिलाती-डुलाती। वह अपनी मां का कभी माथा चूमती कभी गाल, पर मां टस से मस न हुई। लोगों ने सोनिया को समझाया कि उसकी मां मर गई है और अब नहीं लौटेगी।

सोनिया रोते-चिल्लाते गिरजाघर गई। शायद पादरी बताए कि उसकी मां कैसे ज़िंदा हो सकती है? पूरा गिरजाघर ढूंढा पर पादरी नहीं मिला। पता चला कि महामारी के डर से पादरी नगर छोड़कर चला गया है। सोनिया मुंह लटकाकर वापस आ गई। उसने अपनी मां के शव को मोमबत्तियों से सजाकर मोमबत्तियों को जलाया। मोमबत्तियों की रोशनी में उसके नयनों से बहते आंसू मोती से चमक रहे थे। मां के हाथ में थमी मोमबत्ती मानो कह रही थी कि जीवन जैसा भी हो उसे प्रकाशमान बनाए रखना। ❑

–2जी, 0595- ओस्लो, नॉर्वे

निरंकारदेव सेवक का जन्म 28 जनवरी 1919 में हुआ। हिंदी बाल साहित्य के वरिष्ठ कवियों में निरंकार देव सेवक प्रमुख हैं। सेवक जी ने बाल कविताएं और शिशुगीत लिखने के साथ ही हिंदी बाल कविता को दिशा देने का बहुत बड़ा काम किया। उनके द्वारा लिखे गए शिशुगीत हिंदी बाल साहित्य में आदर्श शिशुगीत माने जाते हैं। 29 अक्टूबर, 1994 को उनका निधन हो गया।

मेरा मुन्ना बड़ा सयाना

–निरंकार देव सेवक

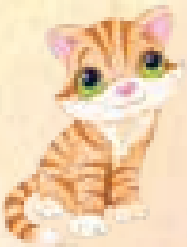

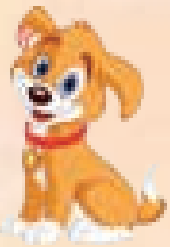

मेरा मुन्ना बड़ा सयाना, शाम हुए सो जाता है,
ऊधम नहीं मचाता है।

बिल्ली रानी, यहां न आना अब तुम शोर मचाने को,
चूहे वह बैठी है बिल्ली तुझे पकड़ ले जाने को।
मेरा मुन्ना तुम दोनों के झगड़े से घबराता है,
सांझ हुए सो जाता है।

मेरा मुन्ना बड़ा सयाना, सांझ हुए सो जाता है
ऊधम नहीं मचाता है।

बंदर बाबा खों-खों करके फिर न उतरना आंगन में,
मुन्ना के हाथों का लड्डू छीन न ले जाना छन में।
मेरा मुन्ना अब आंगन में नहीं नाचता-गाता है,
सोने में सुख पाता है।

मेरा मुन्ना बड़ा सयाना, सांझ हुए सो जाता है।
ऊधम नहीं मचाता है।

चंदा मामा, तुम क्यों आए छत पर चढ़ मुसकाने को,
सब छोटे-छोटे बच्चों को सुंदर सपन दिखाने को।
मेरा मुन्ना अभी तुम्हारी आहट से अकुलाता है,
तुमको नहीं बुलाता है

मेरा मुन्ना बड़ा सयाना, सांझ हुए सो जाता है।
ऊधम नहीं मचाता है।

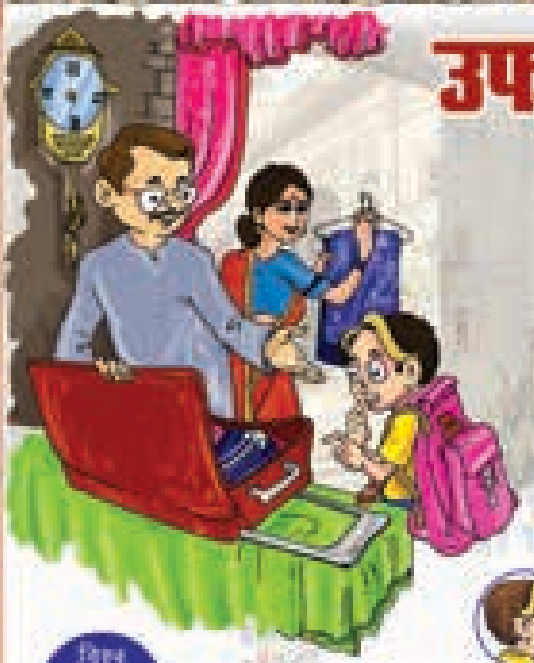

उफ़ यह जनसंख्या

चित्रकथा : परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव

सवेरा हुआ तो उसने सबसे पहले अपने आपसे पूछा –
मैंने रात में जैसा आसमान यहां गांव में देखा, वैसा आसमान हमको शहर में क्यों नहीं दिखाई देता...? इतने सुंदर तारे, सुंदर आसमान और ढेरों तारे, बबलू अभी भी आश्चर्यचकित था।
नित्यक्रिया के उपरांत उसने अपने पापा से यही पूछा तो पापा ने उसे दुलारते हुए कहा –
बेटा शहर में कितनी भीड़ है, कितने मकान हैं, हर तरफ सड़कें हैं, मोटर गाड़ियां, बिजली की रोशनी, स्ट्रीट लाइट, बड़ी-बड़ी इमारतों की आर्टिफिशियल लाइट्स सभी उस प्राकृतिक आसमान की सुंदरता को गायब कर देते हैं।
पापा... ऐसा क्यों हो रहा है कि शहर में भीड़ के अलावा कुछ और दिखाई ही नहीं दे रहा। न दिन का अंतर न रात का।
बेटा हमारी पृथ्वी पर मानव जनसंख्या बढ़ती जा रही है इसके कारण लोग जंगल, रोजगार, शिक्षा आदि के लिए प्राकृतिक संसाधन कम करते जा रहे हैं। कृत्रिम साधन बढ़ रहे हैं, लोग बढ़ रहे हैं। उनकी सुविधाओं के लिए प्रकृति के अनेक साधन कम हो रहे हैं। हमारी जनसंख्या कहां की कहां पहुंच गई है। अब इस जनगणना से पता चलेगा कि हमारी वर्तमान स्थिति क्या है?
पापा ये जनगणना क्या है? इसका असर प्राकृतिक संपदा पर कैसे पड़ता है, मुझे इसको विस्तार से समझाइए।

बेटा जैसा कि नाम से ही स्पष्ट हो रहा है कि जनसंख्या मापदण्ड इस देश में कितने लोग रहते हैं। जैसे कि इस समय हमारे घर में कितने लोग हैं, गिनती करो।
दादा-दादी, मम्मा-पापी, आप और मम्मी, दादू, मामू, मैं और बड़े प्यारे दादा जी। इन सबको मिलाकर कुल 10 लोग हैं, ठीक पापा।
तो बेटा, ठीक इसी तरह इस भारत देश के सभी लोगों की गिनती की जाती है यह एक बहुत सही प्रक्रिया है।
इस मापदण्ड में सिर्फ लोगों की ही गिनती नहीं की जाती बल्कि उनके साथ मकान और आवास की भी गिनती होती है जिससे हमारे देश के सभी लोगों की आर्थिक स्थिति, भाषायी संसाधन तथा पुरानी संस्कृति की भी जानकारी हो जाती है।
अच्छा पापा आप यह बताइये कि अपने देश में जनसंख्या कब की गयी थी।
2011 में अपने भारत देश की जनसंख्या की गयी थी, 1 मार्च, 2011 को भारत की जनसंख्या 121.08 करोड़ थी, इसमें 62.32 करोड़ पुरुष और 58.75 करोड़ महिलाएं थीं।
लेकिन पापा इसमें तो बच्चों की संख्या तो बताई ही नहीं गयी।
बेटा... इसकी भी गणना की जाती है, लेकिन आप यह भी बताओ कि आप बड़ा हो जाओगे या लड़का या लड़की, लड़के हो गा तो आप हुए पुरुष, और लड़की, छोटी बहन की गिनती होगी महिला में, समझे?
पापा हमने देखा है कि कहीं-कहीं लोग ज्यादा और कहीं-कहीं कम लोग रहते हैं तो क्या इसका भी जनसंख्या में कोई महत्व है...?
अरे नहीं! इसका तो बहुत महत्व है, आखिर इसी के आधार पर जनसंख्या मापदण्ड का पता चलता है कि प्रति वर्ग किलोमीटर में कितने लोग रहते हैं। इसके आधार पर ही आबादी और कम आबादी का क्षेत्र सुनिश्चित किया जाता है। आबादी जानकारी के लिए बता दूं कि बिहार, पश्चिम बंगाल तथा केरल सबसे अधिक घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं।
पापा आपने अपने देश के पुरुष और महिलाओं की संख्या बतायी थी इसमें तो पुरुष ज्यादा हैं और महिलाएं कम क्यों?
बेटा इसको कहते हैं लिंगानुपात अर्थात पुरुष और महिलाओं का अनुपात, इसकी गणना में किसी मापदंड में इस निश्चित काल के दौरान पुरुष और महिलाओं की संख्या की गिनती की जाती है, दुर्भाग्य से अपने देश में यह अनुपात थोड़ा निराशाजनक है। इस समय प्रत्येक 1,000 लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या 914 ही रही है।
पापा क्या अपने देश की जनसंख्या बढ़ रही है? कहीं यह घटती जनसंख्या का कोई दुष्परिणाम तो नहीं...?
बेटा रोगी ही स्थिति में नुकसान है। जैसे हमारे देश की जनसंख्या बढ़ रही है और बहुत ज्यादा बढ़ रही है। ज्यादा नुकसान तो है बच्चों की उचित देखभाल उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य आदि का पहले बताया अभाव यानि एक घर में कई बच्चे हो जाते हैं तो एक व्यक्ति के लिए बहुत मुश्किल है कि सभी बच्चों का उचित तरीके से देखभाल कर सके, क्योंकि सभी बच्चों को यह जरूरी पड़ेगी, भोजन और अन्य जरूरतें पूरी नहीं कर सकता। दूसरा नुकसान है बेरोजगारी, जब एक घर में परिवार कई लोग हो जाएंगे तो बेरोजगारी एक चिंतित आबादी, स्वास्थ्य, सुविधाएं मिलने में आदि में बहुत असिविधाओं का सामना होगी।

और क्या दिक्कतें आएँगी...?
बढ़ती जनसंख्या पृथ्वी पर बोझ है। अधिक लोग होंगे तो पृथ्वी पर मौजूद प्राकृतिक संसाधनों का दोहन अधिक होगा, पानी का संकट बढ़ेगा, अनाज पैदा करने वाली ज़मीन पर मकान बनेंगे तो पेट भरने के लिए अन्न कहाँ से पैदा होगा..? पेट भरने के लिए कई लोग भिखारी बन जाते हैं। असामाजिक काम भी करने लगते हैं, अपराध बढ़ता है।
प्रदूषण भी बहुत बड़ी समस्या है, बढ़ती जनसंख्या से प्रदूषण भी तो फैलता है, आखिर उनकी छोड़ी हुई गंदगी ही तो प्रदूषण फैलाती है। अधिक लोग होंगे तो गाड़ियाँ भी अधिक चलेंगी और उनसे इसी तरह प्रदूषण फैलेगा।
हां मम्मा इसलिए मुझे लगता है कि शहर में अधिक प्रदूषण, कृत्रिम प्रकाश के कारण गांव जैसा सुंदर वातावरण नहीं मिल पा रहा था, क्योंकि वहां लोग अधिक हैं, अधिक लोग अधिक समस्या
हां बेटा, तुम काफी समझदार हो गए हो, पर भविष्य तुम्हारा है, आज से ही अब तुम इस तथ्य को समझ जाओगे तभी भविष्य में मानव एवं प्रकृति संतुलन का सामंजस्य बनेगा, अन्यथा कई अन्य समस्याएं उत्पन्न हो जाएंगी।
समय पर काम हमारा है और भविष्य भी बहुत अच्छा होगा, अब मैं समझ गया हूं कि बढ़ती जनसंख्या का नुकसान। गर्मी की छुट्टियों के बाद, स्कूल खुलने पर मैं अपने दोस्तों तथा अध्यापक से इसकी चर्चा करूंगा।
समाप्त

स्वच्छताग्रही फुफ्फो

–माशा

सुबह हो चुकी थी। इमराना फुफ्फो के घर चहल-पहल थी। मानो कोई त्योहार हो। फुफ्फो ने रूबीना की मदद से इनायत की लाई हुई साड़ी पहनी थी। रूबीना उनकी पोती, और इनायत उनका बेटा। नई नवेली साड़ी में सजी फुफ्फो को सब मजाक में हूर परी कह रहे थे और फुफ्फी जवान लड़कियों सा शर्मा रही थीं। आज उनका सम्मान होना था। जिले के कलेक्टर साहब आ रहे थे। सत्तर की उम्र में कोई स्वच्छाग्रही बने, यह कोई हंसी की बात थोड़ी न है। स्वच्छाग्रही... क्या आपको नहीं पता कि यह क्या होता है... चलो, हम बताए देते हैं। स्वच्छाग्रही स्वच्छ भारत मिशन के स्वयंसेवी हैं- मतलब कोई भी स्वच्छ भारत मिशन से जुड़कर देश को स्वच्छ बनाने की मुहिम में हिस्सा ले सकता है। स्वच्छाग्रही पंजीकृत होते हैं और यह देखते हैं कि देश में लोग स्वच्छता का पालन कर रहे हैं या नहीं। आस-पास गंदगी तो नहीं फैला रहे। घर में शौचालय बनने के बाद भी कहीं खुले में शौच तो नहीं कर रहे। शौचालय टूटे हुए तो नहीं हैं। साफ-सफाई को लेकर लोगों की आदतें बदली हैं या नहीं। तो, फुफ्फो कई साल से स्वच्छाग्रही बनी हुई हैं। पंचायत में तो पहले से काम करती थीं, अब स्वच्छाग्रही भी बन गई हैं।

फुफ्फो... इमराना को कैसे लोग इमराना फुफ्फो कहने लगे, पता नहीं। हमें तो इतना पता है कि वह परिवार के अलावा अपने समुदाय और गांव के बारे में भी सोचती हैं। आस-पास वाले उनसे बहुत प्यार करते हैं, उनका सम्मान भी करते हैं। जो वह कह देती हैं, लोग मानते हैं। चाहें तो गुस्से से आसमान सिर पर उठा लें, चाहें तो किसी भी डांट दें। पर एक पल में गुस्सा, एक पल में प्यार। इसीलिए इमराना फुफ्फो का इतना रुतबा है। बेटा इनायत शहर में रहकर नौकरी करता है। इमराना, अपनी बहू फातिमा और पोती रूबीना के साथ रहती हैं। तीन औरतों वाला घर। थोड़ी खेती बाड़ी को बहू फातिमा ही संभालती है। रूबीना कक्षा आठ में पढ़ती है। वह इंटरनेट पर देख-देखकर फुफ्फो

को दुनिया भर की खबरें बताती हैं। सफाई का महत्व रूबीना ने फुफ्फो को बताया, या फुफ्फो ने रूबीना को, यह पता लगाना मुश्किल है। हां, यह जरूर है कि फुफ्फो स्वच्छाग्रही बनीं तो इसका बहुत सारा श्रेय रूबीना को जाता है जिसने स्वच्छ भारत मिशन के बारे में फुफ्फो को बताया।

गांव में खुले में शौच करना आम बात थी। फुफ्फो के घर के अलावा दो-चार घरों में ही शौचालय था। तीन औरतों वाले घर में शौच करने खेतों में जाना फुफ्फो को कभी गवारा नहीं था। अपने निकाह के बाद ससुरालियों से लड़-भिड़कर फुफ्फो ने पचास साल पहले ही घर में शौचालय बनवा लिया था। नहाने का कमरा अलग से बनवाया था। पहले तो आंगन में किनारे लगे नल पर ही सब नहाते थे। पर फुफ्फो को यह मंजूर न था। यूं तो सबसे परदा करते फिरो, पर नहाने-धोने के समय शर्म को ताक पर रख दो। इसीलिए अपने निकाह के बाद ही उन्होंने एक कोठरी को नहाने का कमरा बनवा लिया था। पर गांव के बाकी घरों में ऐसा न था। गांव में सत्तर के करीब घर थे। कई आलीशान भी थे। खुले-खुले और सुंदर। घर सुंदर और शौचालय नदारद। 2 अक्टूबर 2014 को जब प्रधानमंत्री ने राजघाट से स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत की तब फुफ्फो ने गांव में घूम-घूमकर सबको स्वच्छता का पाठ पढ़ाने की कोशिश की। इसके बाद गांव में शौचालय बनाने के लिए सरकार से लोगों को पैसे मिले। पर लोगों ने शौचालय बनवाया नहीं। कई ने खराब क्वालिटी के शौचालय बनवाए। कई ने शौचालय तो बनाए पर उसका इस्तेमाल नहीं किया। उन्हें खुले में शौच की आदत थी। वह ऐसा ही करते रहे। फुफ्फो को यह सब देखकर बहुत बुरा लगा।

इसके बाद रूबीना ने फुफ्फो को यह खबर बताई कि छत्तीसगढ़ की कुंवर बाई यादव ने 106 साल की उम्र में घर में शौचालय बनाने के लिए अपने छह बकरे बेच दिए। बस फुफ्फो कुंवर बाई से ऐसा प्रेरित हुईं तो उन्होंने भी इस मिशन से जुड़ने का फैसला किया। पर कैसे... रूबीना ने बताया कि हम स्वच्छाग्रही बनकर भी इस मिशन के लिए काम कर सकते हैं। बस, फुफ्फो स्वच्छाग्रही बन गईं।

गांव में करीब 62 घरों में शौचालय नहीं थे। स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के तहत एक घर में शौचालय बनाने के लिए 12,000 रुपए की आर्थिक सहायता दी गई। पर जैसा कि हमने पहले भी कहा, लोगों ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि अच्छा शौचालय बनाया जाए। हुआ यह कि कुछ ही दिनों में वह टूट-फूट भी गया। लोग खुले में ही शौच करते रहे। कागजों पर तो गांव ओडीएफ- यानी खुले में शौच से मुक्त हो गया। लेकिन असल में हालत वही की वही रही। फुफ्फो ने इसी को बदलने की कोशिश की।

घर-घर जाकर लोगों के बताया कि इतने पैसे में तो शौचालय ठीक-ठीक बन सकता था। हाथ धोने के लिए वॉश बेसिन और शौचालय की सफाई के लिए पानी जमा करने की टंकी भी बन सकती थी। फिर अगर थोड़ा पैसा अपने आप भी लगाना पड़े तो क्या बुरा है। साफ-सफाई तो हर हाल में जरूरी है। उसका फायदा तो हमें ही होने वाला है। उन्होंने लोगों को बताना शुरू किया कि डबल पिट शौचालय के गड्ढे में ईटों से चिनाई या सीमेंट का खंडा डला होना चाहिए। डबल पिट के शौचालय में प्रत्येक गड्ढे का साइज 4 फुट गहरा, 4 फुट लंबा तथा 4 फुट चौड़ा होना चाहिए तथा एक गड्ढे से दूसरे गड्ढे की दूरी कम से कम 3 फीट होनी चाहिए। ये दोनों पिट शौचालय के नजदीक होने चाहिए जो कि

एक सेंक्शन बॉक्स से जुड़े होते हैं और उनकी आपसी दूरी कम से कम एक मीटर होनी चाहिए। ये पिट किसी नल या पानी के स्रोत से कम से कम 15 मीटर यानि 40-45 फीट की दूरी पर होने चाहिए।

फुफ्फो ने कुछ काम और किए। वह रोजाना सुबह सूरज निकलने के साथ हरी साड़ी में गांव के निरीक्षण पर निकल पड़तीं। देखतीं, गांव में सफाईकर्मी नियमित आ रहे हैं या नहीं, कहीं नाली चोक है, कहां पानी भरा है,किसने अपने घर के आगे कूड़े का ढेर लगा रखा है। फुफ्फो के पास सीटी भी रहती। अगर कोई खुले में शौच करता दिखता, तो सीटी बजाकर उसे समझातीं कि दोबारा ऐसा न करे। उसे खुले में शौच करने के नुकसान बतातीं। किसी के पास पैसा न होता तो उधार ईंटे दिलवातीं। गांव में जगह-जगह कूड़ेदान भी रखवाए गए। उनसे प्रेरित होकर बहू फातिमा ने राजमिस्त्री का काम सीखा। जहां जरूरत होती, शौचालय बनाने में भी मदद करतीं। फुफ्फो हफ्ते में एक दिन चौपाल भी लगातीं। इस चौपाल में गांव को स्वच्छ रखने के हर पहलू पर बात करतीं। जैसे औरतों को अगर संक्रमण से बचना है तो शौचालय कितना जरूरी है। आए दिन औरतों को कोई न कोई बीमारी घेरे रहती है। यह आस-पास की गंदगी का ही नतीजा है। फुफ्फो ने एक शुरुआत और की। उन्होंने पंचायत घर में शौचमुक्त लोटा रखा। तय किया कि जब तक शौचालय नहीं है, तब तक हर हफ्ते एक रुपया जुर्माना शौचमुक्त लोटे में डालना होगा। गांव के प्राथमिक विद्यालय में रूबीना की मदद से नाटक के जरिए स्वच्छता पर एक नाटक खेला।

स्वच्छाग्रहियों को सरकार वेतन भी देती है। लेकिन फुफ्फो को इस काम के लिए पैसों की क्या जरूरती थी- उन्होंने तय किया कि इस वेतन का इस्तेमाल वह सफाई कर्मचारियों के लिए करेंगी। चूंकि असली स्वच्छाग्रही तो वे ही हैं। फुफ्फो इस पैसे से उनके बच्चों के लिए कपड़े, खिलौने, किताबें वगैरह खरीदती हैं।

फुफ्फो की कोशिशें आस-पास के गांव वालों के लिए मिसाल बनीं। इसकी भनक जिला कलेक्टर जी. साईंनाथ तक पहुंची। उन्होंने घोषणा की कि राज्य सरकार फुफ्फो को सम्मानित करना चाहती है। सत्तर साल की उम्र में एक नए आंदोलन को खड़ा करने का माद्दा बहुत कम लोगों में होता है। अधिकतर आदमी और औरतें, इस उम्र

में खटिया पकड़ लेते हैं। लेकिन फुफ्फो ने तो जवान बच्चों को भी मात दी है। तो आज गांव में जश्न की तैयारी है।

पीं... पीं... पीं... मोटर की आवाज आई। कलेक्टर साहब पंचायत घर पहुंचने वाले हैं। फुफ्फो भी इनायत, फातिमा और रूबीना के साथ पंचायत घर की तरफ चल पड़ीं। घर पर गांव के बहुत से लोग जमा थे। सभी पंचायत घर चल पड़े। मोटर से पहले ही वे सब पंचायत घर पहुंच जाएंगे। आखिर रास्ता ही कितना सा है। मोटर को पहुंचने में समय लगे, पर तेज कदमों से दो गली पार की और पहुंच गए पंचायत घर।

फुफ्फो की आंखों में चमक है– मानो खुदा मिल गया हो। खुदा भी तो साफ-सफाई का तलबगार होता है। सरला बहन कहती हैं, स्वच्छता में ही देवता का वास होता है। बेशक, खुदा हो या भगवान, बस नाम का ही तो फर्क है। असल में दोनों स्वच्छता में ही बसते हैं। ❑

–बी-33, मानवस्थली अपार्टमेंट्स, वसुंधरा इन्क्लेव, नई दिल्ली-110096

रचनात्मक कार्यों से नए समाज का निर्माण

प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 13 मई, 2019 को विभाग की पुस्तक दीर्घा में सांय 3.30 बजे 'रचनात्मक कार्यों से नए समाज का निर्माण' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा की मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध गांधीवादी समाजसेवी सुश्री शोभना राधाकृष्णन थीं।

इस अवसर पर उन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन उनके कार्य, उद्देश्य तथा विचारधारा पर व्यापक प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि समाज के लिए गांधी जी की क्या योजनाएं थीं और वे अब किस तरह सफलतापूर्वक फलीभूत की जा रही हैं। परिचर्चा में दर्शकों ने सुश्री शोभना से महात्मा गांधी से संबंधित अपनी जिज्ञासाएं शांत की।

इस कार्यक्रम में विभाग की प्रधान महानिदेशक महोदया, वरिष्ठ अधिकारी गण, कर्मचारी तथा विद्यार्थीगण उपस्थित थे। ❑

जीयनपुर का पानी

–जयप्रकाश सिंह बंधु

यह कहानी बहुत पुरानी नहीं है, बल्कि हाल की ही घटना है। बिहार के कई जिलों में लगातार कई वर्षों से सूखे की वजह से गांवों की हालत खराब होती चली गई। पहले किसी तरह गांव के लोगों को पीने का पानी मिल जाता था। पर खेती के लिए नहीं मिल पाता था। तब भी गांव वाले नहीं चेते। प्रशासन भी हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा। पर अबकी बार तो पीने के पानी पर ही आफत आ गई। फिर क्या था चारों तरफ हाहाकार मच गया। जहां जाओ एक ही शिकायत कि कुएं सूख गए हैं। हैंडपंप फेल हो गए हैं। आस-पास के दर्जनों गांव ऐसे थे जो जमीन के पानी पर ही निर्भर थे। आस-पास कोई नदी भी नहीं थी कि लोग अपना काम चला लेते। नतीजा यह हुआ कि लोगों ने हाथों में पानी के बर्तन लेकर पहले तो मुखिया का घेराव किया। बेचारा मुखिया क्या करता? उसका भी हैंडपंप फेल था। अत: उसने अपने हाथ खड़े कर दिए। फिर लोग उस इलाके के विधायक साहब के पास पहुंचे। उन्हें खूब भला-बुरा कहा। वहां से जब उन्हें भगा दिया गया तब वे सड़क पर गए और सड़क जाम कर दिया।

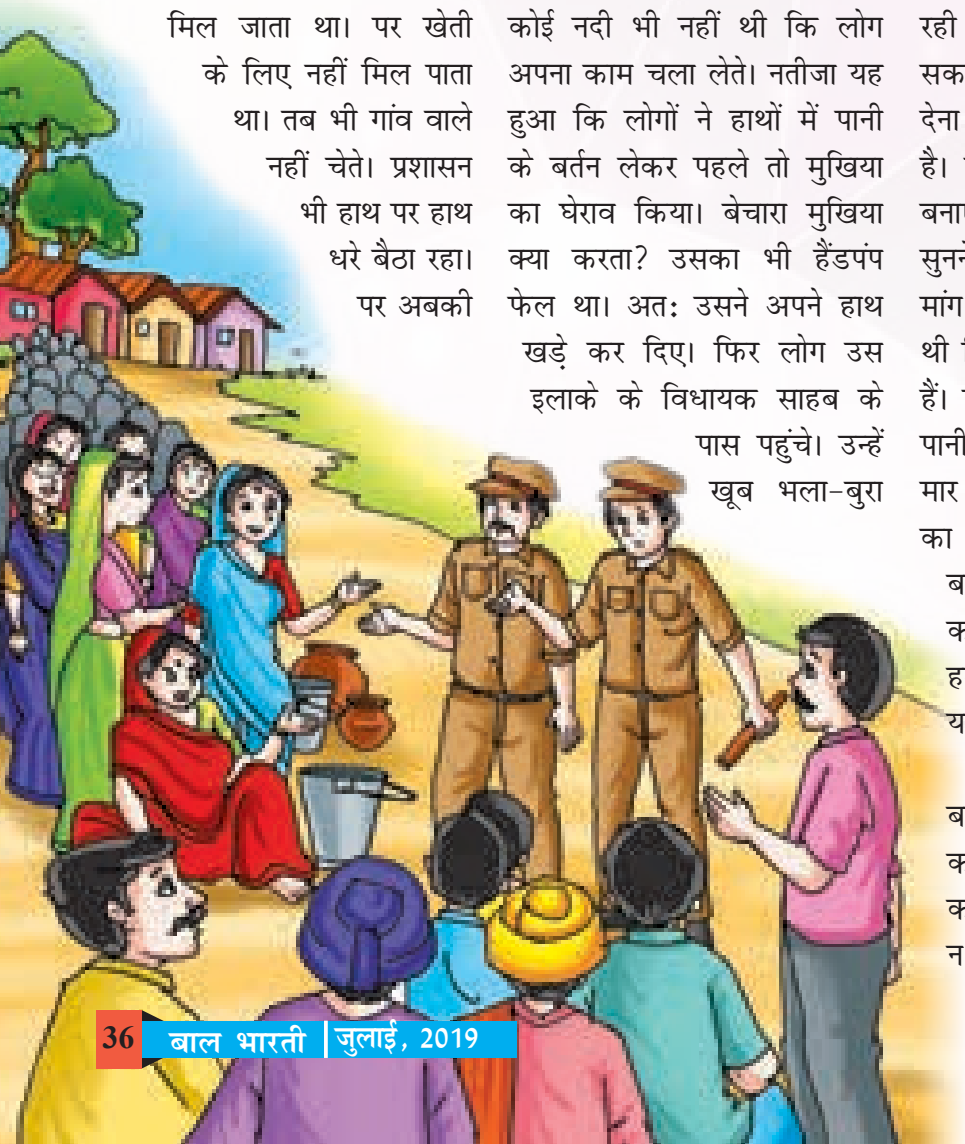

यातायात की आवाजाही रुक गई तो पुलिस आ गई। पर भीड़ देखकर उसके भी हाथ-पांव फूल गए। पुलिस लोगों को समझा-बुझा रही थी कि वह पानी कैसे दे सकती है? उसका काम पानी देना नहीं, सड़क-जाम छुड़वाना है। शहर-गांव में कानून व्यवस्था बनाए रखना है। पर लोग थे कि सुनने को राजी ही न थे। बस पानी मांग रहे थे। कुछ की शिकायत थी कि वे कई दिनों से नहाए नहीं हैं। पीने और खाना बनाने को भी पानी नहीं है। उनके कपड़े बदबू मार रहे हैं। महिलाओं और बच्चों का हाल बहुत बुरा था। महिलाएं बहुत नाराज थीं। वे पुलिस से कह रही थीं कि प्रशासन यदि हमें पानी नहीं दे सकता तो हम यहीं प्राण त्याग देंगे।

पुलिस के सामने चुनौती बहुत बड़ी थी। जोर-जबरदस्ती करने से पब्लिक के बेकाबू होने का खतरा था। क्योंकि मरता क्या न करता। वैसे ही पानी सबकी

जान लेने पर तुला हुआ था। पुलिस जनता को छेड़ना नहीं चाहती थी। इसलिए वह अभी बेचारी बनी हुई थी। तभी वहां भागते-भागते दो बच्चे पहुंचे। वे अपने-अपने मां-बाप, भाई-बहन जो कि धरने पर आए हुए थे, की खोज में ही वहां पहुंचे थे। उन बच्चों ने पुलिस को बताया कि पुलिस अंकल, यहां से पांच मील की दूरी पर तालाब वाले गांव में सब लोगों को भेज दीजिए, हम लोग वहीं से आ रहे हैं। वहां बहुत पानी है।

पुलिस को चैन आया। उसने पानी के लिए आई जनता से कहा, ''घंटे भर में हम आप लोगों को पानी देते हैं। आप लोग इधर अपने-अपने बर्तनों को लाइन में रख दीजिए। सड़क जाम को तुरंत हटाइए। अभी घंटे भर में पानी का टैंकर पहुंचाते हैं। यह सुनते ही लोगों को एक आस बंधी। उन्होंने पुलिस पर भरोसा कर लिया और उनके कहे अनुसार काम किया।

इधर पुलिस ने गांव का पता कर पानी के टैंकर को वहां बुला लिया। वह बच्चों को लेकर उस गांव की ओर रवाना हो गई जहां पानी था। रास्ते में पुलिस बच्चों से कहती हुई आगे बढ़ रही थी कि तुमने तो आज हमें बचा ही लिया। पर तुम लोगों को उस गांव के बारे में जानकारी कहां से मिली?

इस पर बच्चों ने बताया कि कई दिन पहले ही उन्हें इस तालाब वाले गांव के बारे में स्कूल में शिक्षकों द्वारा बताया गया था। यह भी बताया गया था कि उस गांव का नाम जीयनपुर है। समस्या जब गंभीर हुई तो उत्सुकतावश हम लोगों ने वहां जाकर देखने का फैसला किया। यह सुन पुलिस ने बच्चों को शाबाशी दी। पुलिस की जीप अब गांव में प्रवेश कर रही थी। वहां लोगों का रेला लगा हुआ था। लोग दूर-दूर से पानी लेने पहुंचे हुए थे। कोई मोटरसाइकिल से पहुंचा था तो कोई साइकिल से। छोटे-छोटे जीप, ट्रैक्टर से भी लोग पानी ले जा रहे थे। वह बड़ा सुंदर गांव था और सबको पानी देकर गर्वित हो रहा था। वहां के कुछ नौजवान लोगों की मदद कर रहे थे। वहां का हर हैंडपंप काम कर रहा था। इसका राज जानने में पुलिस जुट गई थी।

इधर जब गांव में लोगों की भीड़ बढ़ने लगी तो तालाब और कुएं कुछ चिंतित हुए। कुंए ने तालाब से कहा, मित्र! लगता है मैं तो सूख ही जाऊंगा। प्रतिदिन न जाने कहां से लोग हंड़िया, गैलेन लेकर चले आ रहे हैं। खूब पानी खींच रहे हैं। उनकी प्यास बुझाते-बुझाते मैं तो गया!! फिर अपने गांव को पानी कैसे दे पाऊंगा?

इस पर तालाब ने कुएं को ढांढस बंधाया। कहा, मैं तुझे सूखने नहीं दूंगा। चिंता मत कर। हम सब का धर्म ही है सबकी प्यास बुझाना। जब तक कतरे-कतरे में पानी है हम किसी को मना कैसे कर सकते हैं? और यह हमारे कर्म के खिलाफ भी होगा। सदियों से हम अनजान राहगीरों की प्यास बुझाते आए हैं। हम न जाति-पाति, धर्म-अधर्म पर सोचते-विचारते हैं और न ही पानी के नाम पर कोई राजनीति ही कर सकते हैं। देखो न जाने कितने दिनों से ये लोग नहाए नहीं हैं। मल-मलकर, डुबकी लगा रहे हैं। इन्हें देखकर मजा भी आ रहा है और तरस भी कि बेचारों के पास कुंआ तो होगा पर तालाब नहीं है। तालाब के अभाव में कुएं सूख गए होंगे। सच बंधु इन लोगों की सेवा कर हमें बहुत आनंद आ रहा है। सेवा करने में एक विशेष ही आनंद हैं। जिसने कभी यह काम किया ही नहीं वह इसके बारे में क्या जाने?

हां! वह तो ठीक है। तुम ठीक ही कहते हो, कि तुम मुझे सूखने नहीं दोगे। गर्मी में मैं भी तुम्हारी सूखती सेहत को पानी देता हूं। जब मुझसे खेती के लिए तीन-तीन बोरिंग पानी निकालते हैं, तब रास्ते में बहता पानी रिसकर तुम्हारे में वापस भी जाता रहता है। और जब बादलों की कृपा से खूब बारिश होती है तो तुम न जाने कितना

पानी स्टोर कर लेते हो इन बुरे दिनों के लिए। हम-दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। एक-दूसरे को समृद्ध करते रहते हैं और आज इसका फायदा न केवल अपने गांव को हो रहा है बल्कि न जाने कितने गांवों का हमने भला कर दिया है।

तालाब ने दुखी मन से जोड़ा, जानते हो कुंआ भाई। कहीं-कहीं गांवों में तो हमारा वजूद बचा हुआ है, पर इन शहर वालों ने तो हमें शहर से ही बाहर निकाल दिया। बड़े-बड़े झीलनुमा तालाब तो शहरों की पहली जरूरत होनी चाहिए थी। पक्के घरों की छतों के पानी को पाइप लाइन से जोड़कर मुझ तक पहुंचाया जाता तो हम लोग किसी शहर को प्यासा मरने ही न देते। पर वहां के लोगों ने तो हमें कूड़े से भर दिया, फिर वहां बड़ी-बड़ी इमारतें बना लीं। कौन समझाए मूर्खों को। सब केवल पानी चूसना जानते हैं। पर पानी बचाना व सहेजने की कला इस सभ्यता के पास नहीं है। मेट्रो, ऊंची इमारतों और गाड़ियों के नाम पर लोग में बड़े सभ्य बनते हैं। हमारे लिए कोई कुछ करता ही नहीं। हां कुछ लोगों ने हमारे लिए बहुत काम किया पर ऐसे गिनती के है। जरूरी है कि हम लोगों का वजूद हर गांव व शहर में अनिवार्य रूप से हो।

कुंओं और तालाब की दार्शनिक बात-चीत वहां उपस्थित सभी हरे-भरे पौधे, मछलियां, सांप, मेढक और जाने कितने पानी के कीड़े-मकोड़े सुन रहे थे। वे भी गर्वित हो रहे थे। यही कि उन्हीं की वजह से आज वे भी जिंदा हैं। और उनका गांव कितना अच्छा है गांव के लोग कितने दूरदर्शी हैं जो परंपरागत वर्षा के पानी को रोकने के उपाय के महत्व को समझते हैं। पूर्वजों ने तालाब और कुंओं का निर्माण करवाया था पर नई पीढ़ी ने उसे भरकर सब कुछ मटिया-मेट कर दिया। विज्ञान के नशे में लोगों ने समरसेबुल तो लगा लिया, पर वह भी तो एक दिन सूख जाएगा। लोग धरती से सिर्फ पानी खींचना जानते हैं। धरती में पानी कैसे जाए इसका उपाय कोई नहीं करता। आज भी किसी को यह समझ में क्यों नहीं आ रहा है?

वहीं तालाब के किनारे हरी-भरी मेंहदी लहरा रही थी। उसे अपने पर बड़ा घमंड रहता था। पर आज वह भी नरम पड़ गई। वह भी बोल उठी ''मैं तो गांव वालों को लाल रंग से रंग कर उनके जीवन को

संवारती हूं। पर आज तुम लोग न होते तो मेरा भी वजूद न होता। तुम दोनों की वजह से ही आज इलाके में हमारे गांव का नाम हो रहा है। लोग इस गांव को तालाब वाला गांव के नाम अधिक जानते हैं।''

तालाब के पास एक धर्मशाला थी। वहां घने छायादार पेड़ थे, शादी-विवाह में यहां बैंड-बाजे सहित गांव वाले आते और आशीर्वाद लेते। इससे कोई भी शुभ काम में कुएं और तालाब को भी लगता था कि उनकी उत्सव में समान रूप से भागीदारी है। वहीं एक बूढ़ा नील था जिस पर बच्चे, जवान चढ़-चढ़कर तालाब में छलांग लगा देते थे। यह सब देख कुआं और तालाब खूब प्रसन्न रहते थे।

उधर जब-जब टैंकर पानी लेकर पहुंचता तो लोग चिल्ला उठते, जीयनपुर का पानी आ गया। पानी पी-पीकर लोग दुआ दे रहे थे- आज जीयनपुर का पानी नहीं मिलता तो हम लोगों का क्या होता? जो लोग अब तक जीयनपुर नहीं पहुंच सके थे वे अब भी इस राज से अनभिज्ञ ही थे कि सब जगह का पानी सूख जाने के बावजूद जीयनपुर में पानी क्यों है? ❑

-फ्लैट 302, तृतीय तल,
38/4 खेत्र मित्र मोहन लेन,
सलकिया हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल

पानी है जीवन का वरदान

-कृष्ण कुमार उपाध्याय

तालाब पोखरे हैं, जलहीन।
पथरीली हो रही जमीन।।
पानी का संकट है भारी।
जूझ रही है दुनिया सारी।।

जल जीवन है बात पुरानी।
मानव करता है मनमानी।।
कटते जाते बाग-बगीचे।
जल-स्तर हो जाता नीचे।।

बूंद-बूंद से ताल भरे
पानी की सब बचत करें।।
वृक्षारोपण हो लक्ष्य सभी का।
हल होगा संकट पानी का।।

हरी-भरी होगी तब धरती।
उपजाऊ हो जाएगी मिट्टी।।
सुखी बनेगा तभी किसान।
हो जाएगा वह धनवान।।

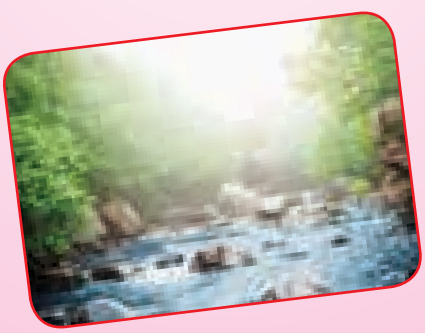

आओ सब अभियान चलाएं।
व्यर्थ न पानी होने पाए।।
जन-जन को दें इसका ज्ञान।
पानी है जीवन का वरदान।।

-जनपद बार एसोसिएशन, बस्ती
जनपद-बस्ती, उ.प्र.-272001

मुझे एक नाम देकर तो देखो

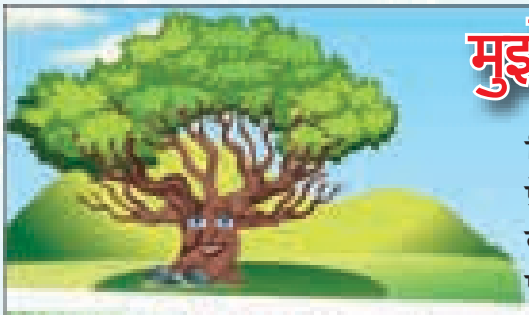

–ध्रुव सहगल

फिर मैं भी तुम्हारा दोस्त बन जाऊंगा
प्रेम करोगे तुम मुझसे, जब मैं नाम से पुकारा जाऊंगा
ललित टीना या मीना कुछ भी रखो
पर मुझे एक नाम देकर देखो

जब सीने से लिपटोगे मेरे, तो शांति तुम्हें पहुंचाऊंगा
जब सूखे पत्तों पर चलोगे मेरे, तो जीवन का सच बताऊंगा
ठंडी छांव की शीतलता में मेरी, अच्छी नींद दिलाऊंगा
मुझे एक नाम देकर तो देखो

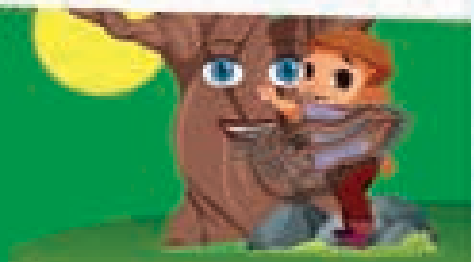

गर्व करोगे तुम भी जब, मैं फलों से भर आऊंगा
बड़ा हो जाऊंगा जब, तो कितनों का घर कहलाऊंगा
प्रेम करोगे मुझसे, जब नाम से पुकारा जाऊंगा
मुझे एक नाम देकर तो देखो

नाम से ही बंधन होता है
नाम से ही प्रीत का संबंध होता है
नाम पे इतिहास बनता है
नाम पर रिश्तों का आधार बनता है
मुझे एक नाम देकर तो देखो

तो अब समय व्यर्थ ना गवाओ
आज ही एक नन्हा पौधा ले आओ
उसे एक सुंदर नाम दो और अपनाओ
और अपने जीवनभर का एक दोस्त पाओ
मुझे एक नाम देकर तो देखो।।

–2/11, नेहरू एन्क्लेव, कालका जी पुलिस स्टेशन, नई दिल्ली-110019

मां का मंत्र

–डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

अभिजीत और रणजीत आपस में गहरे मित्र थे। दोनों शहर की एक कॉलोनी में पास-पास ही रहते थे। वे हमउम्र होने के अलावा एक ही विद्यालय में एक ही कक्षा में पढ़ते थे। उनकी मांएं सगी बहनें थीं। इस कारण से दोनों में और भी गहरी मित्रता था। विद्यालय जाना हो अथवा खेल के मैदान में, उन्हें सदा साथ-साथ देखा जा सकता था। आज्ञाकारी तो थे ही अभिजीत और रणजीत, मेहनती व होनहार बालक भी वे थे! कॉलोनी के लोग उनकी दोस्ती का उदाहरण दिया करते थे। उनकी जोड़ी लव-कुश समान थी।

अभिजीत और रणजीत का नियम था कि विद्यालय से घर आकर विश्राम करते थे, फिर होमवर्क! शाम को मिलकर खेल के मैदान में चले जाते और कोई-न-कोई खेल खेलते। कुछ देर सैर के लिए भी निकट पार्क अथवा खेत की ओर निकल जाते। इस प्रकार अपनी दिनचर्या नियमित बना रखी थी दोनों ने मां का कहना मानना और जीवन में उतारना उन्हें खूब प्रिय लगता था। उनकी मांएं बेहद प्रसन्न थीं कि उन्हें ऐसी संतानें मिली हैं।

रोज की भांति आज भी अभिजीत और रणजीत स्कूल से आए। विश्राम किया और फिर गृहकार्य में लग गए। शाम होते ही दोनों अपने-अपने रैकेट व शटल कॉक लेकर बैडमिंटन खेलने

के लिए सुब्रोतो पार्क की ओर चल पड़े। आधे घंटे के पश्चात अभिजीत के मन में विचार आया। वह रणजीत से बोला, ''रणजीत, चलो सुदीप अंकल के बाग में चलें, मीठे-मीठे आम लगे हुए हैं वहां आजकल।''

''अच्छा? यहां से कितनी दूर है बाग?'' रणजीत ने उत्सुकता भरे स्वर में पूछा।

''यही कोई तीन किमी. की दूरी पर।'' अभिजीत का उत्तर था।

''ठीक है। चलो सैर की सैर हो जाएगी और खाने को मुफ्त में आम मिलेंगे सो अलग। इसे ही कहते हैं एक पंथ दो काज! है न?'' रणजीत ने सफाई दी। रणजीत की इस बात से अभिजीत की हंसी छूट गई।

''पर, एक शंका है।'' अभिजीत बोला।

''क्या?'' रणजीत ने पूछा।

''चलो, छोड़ो। वहां चलकर देखते हैं।'' अभिजीत अनमने मन से बोला।

दोनों तेज कदमों से हाथों में रैकेट और शटलकॉक संभालते हुए सुदीप अंकल के बाग की ओर निकल पड़े। कुछ ही देर बाद वे बाग तक जा पहुंचे। हुआ वही, जिसका डर था। सुदीप अंकल बाग में नहीं थे। बच्चों को बाग में आते हुए देख माली काका ने आवाज़ लगाई।

''कहां घुसे आ रहे तुम दोनों?''

माली काका के इस तरह आवाज़ लगाने पर दोनों के दोनों डरे नहीं। उन्होंने विवेक से काम लिया। अभिजीत ने रणजीत के कान में कहा, ''मां के बताए मंत्र को आजमाते हैं।''

रणजीत ने पूछा, ''कौन-सा मंत्र?''

''मीठी वाणी का!'' अभिजीत ने सफाई दी।

इतनी देर तक कोई जवाब न पाकर सोमू काका के सब्र का बांध टूट गया। पुनः आवाज़ दी, ''अरे बालकों, यहां क्या कर रहे हो?''

''माली काका, नमस्ते!'' दोनों बोले।

''नमस्ते बच्चो, खुश रहो।'' काका ने कहा।

''ये आम कितने मीठे हैं?'' अभिजीत बोला।

''और रसीले भी।'' ''रणजीत ने कहा।''

''पर, सुदीप अंकल तो हैं नहीं। हम यह सोच कर आए थे कि उनसे पूछ कर कुछ आमों का आनंद लेंगे। पर वे तो है नहीं! अब हम आम कैसे खाएंगे?''

दोनों ने चिंता व्यक्त की।

''मैं हूं न!'' माली काका मूंछों को पैनाते हुए बोले।

फिर क्या था! अभिजीत और रणजीत ने पेड़ों को क्षति पहुंचाए बिना कुछ आम तोड़े, खाए और गुठलियां मिट्टी में दबा दीं। उनकी मधुर वाणी और अनुशासन को देख, माली काका बहुत प्रभावित हुए। काका ने दस-दस आम उन्हें घर ले जाने के लिए भी दे दिए।

''वाह, मौज हो गई। आपका बहुत-बहुत आभार काका।'' अभिजीत और रणजीत ने इतना कहकर विदा ली। अंधेरा गहरा गया था। दोनों घबरा गए। सोच रहे थे कि अब घर कैसे पहुंचेंगे? तभी एक मोटर साइकिल सवार दिखाई पड़ा। दोनों ने आवाज़ दी। फिर वही मंत्र आजमाया। परिणाम सुखद रहा। दस-पंद्रह मिनट में ही दोनों अपने-अपने घर थे। मांएं चिंतित थीं। हाथों में आम देखे तो पूछ बैठीं, ''कहां से लाए ये आम?''

''आपके मंत्र ने दिलवाए हैं।''

और फिर अभिजीत व रणजीत ने अपनी-अपनी मां को सारी बातें बताई। मांएं मुस्कुरा रही थीं। संस्कारों की जो सरिता मां प्रवाहित करती है, बच्चे उनमें गोते लगाते हैं। ❑

–785/8, अशोक विहार, गुरुग्राम, हरियाणा-122006

उपन्यास

पीटर पैन कौन आया

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित उपन्यास प्रसिद्ध लेखक जेम्स मैथ्यू बेरी के मूल उपन्यास *पीटर पैन* का हिंदी रूपांतर है। इस उपन्यास का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इसका रूपांतर *रमेश तैलंग* ने *पीटर पैन* के नाम से बड़ी सहज और सरल भाषा में किया है।

एक है बच्चा जो दुनिया के दूसरे सब बच्चों से अलग और विचित्र है। उसका नाम है पीटर पैन। वह बीते हुए कल में था, आज भी है और आने वाले कल में भी रहेगा। बिल्कुल वैसा ही है, जैसा कल था, आज है और कल भी रहेगा। हां, वह सदा बच्चा ही रहेगा। इसलिए दुनिया में अपनी तरह का एक ही बच्चा है पीटर पैन। कोई पूछे कि उसकी उम्र क्या है तो बताना मुश्किल है, क्योंकि न उसका कद बढ़ता है, न उम्र। दिन, महीने, वर्ष बीतते हैं, मौसम आते-जाते हैं, किंतु पीटर पर बीतते समय का, बदलते मौसम का कोई प्रभाव ही नहीं होता।

आखिर पीटर पैन ऐसा क्यों है? वह दुनिया के दूसरे बच्चों जैसा क्यों नहीं है, जो शिशु से बड़े होते हुए किशोर, युवक, प्रौढ़ और फिर बूढ़े हो जाते हैं। यही तो नियम है प्रकृति का, हम अपने चारों ओर यही तो देखते हैं। फिर पीटर पैन ऐसा अनोखा क्यों है?

कहते हैं, वह परियों के साथ रहता है, आकाश में उड़ता है, तो क्या सदा बच्चा रहने का वरदान उसे परियों ने दिया है? शायद ऐसी ही बात है। पीटर पैन के बारे में कई कहानियां कही-सुनी जाती थीं, पर उसे देखा किसी ने नहीं था। उसे देखा था वैंडी ने।

यह वैंडी कौन थी?

वैंडी थी श्री और श्रीमती डार्लिंग की बड़ी बेटी, उसके दो छोटे भाई थे, वैंडी थी नौ साल की, जान की उम्र सात वर्ष थी और सबसे छोटा माइकल था, चार वर्ष का। घर में एक कुत्ता था नाना और एक नौकरानी लिज़ा। बच्चे मां-बाप के दुलारे थे। घर

में सब-कुछ समय से, नियमपूर्वक होता था। सब कुछ ठीक चल रहा था, पर एक रात की बात, बच्चों की मां मिसेज़ डार्लिंग कमरे में आई बच्चों को 'गुड नाईट' कहने के लिए और यह देखने के लिए कि सब कुछ ठीक-ठाक तो है। सोने से पहले उनका यह रोज़ का नियम था। वह बच्चों के पास जरूर आती थीं। जैसे ही वह वैंडी के पलंग के पास पहुंची, तो वैंडी नींद में बड़बड़ा उठी- पीटर... पीटर.. पैन...''

श्रीमती डार्लिंग चौंक गईं- ''अरे, यह वैंडी किसका नाम ले रही थी। इससे पहले तो उन्होंने कभी पीटर पैन का नाम सुना नहीं था। आखिर कौन है पीटर पैन जिसके बारे में वह खुद कुछ नहीं जानती थीं? क्या मां-बाप को पता नहीं होना चाहिए कि उनके बच्चों के दोस्त कौन-से हैं, वे किनसे मिलते हैं, किन बच्चों के साथ खेलते-कूदते हैं।''

उन्होंने वैंडी को जगाया। पूछने लगीं- ''वैंडी, यह पीटर पैन कौन है?''

''वह पीटर पैन है मां, और तुम उसे जानती हो।'' वैंडी ने कहा।

''मैं उसे जानती हूं। यह कैसी बात है वैंडी, मैं किसी पीटर पैन को नहीं जानती।'' श्रीमती डार्लिंग ने कहा। लेकिन यह कहते-कहते ही उन्हें अपने बचपन की याद हो आई। हां, तब उन्होंने भी पीटर पैन का नाम सुना था। असल में तो पीटर पैन सब बच्चों के मन में चला आता है। वहां अपनी जगह बना लेता है। क्योंकि वह परियों के साथ रहता है, इसलिए परियों का कुछ प्रभाव तो है पीटर पैन पर। वह कुछ ऐसे काम कर सकता है जो मैं और तुम नहीं कर सकते। जैसे आकाश में उड़ना। जब चाहे जहां उड़कर पहुंच जाना और नेवरलैंड में रहना।

''तुम पूछोगे यह नेवरलैंड क्या हैं? नेवरलैंड है खोए और भटके हुए बच्चों के रहने की जगह। पीटर पैन जब किसी मां-बाप से बिछुड़े बच्चे को देखता है तो उसे नेवरलैंड में ले जाता है।''

मां ने वैंडी से कहा- ''हां, याद आया, बचपन में मैंने भी पीटर पैन का नाम सुना था पर अब तो मैं कितनी बड़ी हो गई हूं। इसलिए निश्चित ही पीटर पैन भी मेरे जितना बड़ा हो गया होगा। तुम उसे कैसे जानती हो? तुम्हारी सब सहेलियों को मैं जानती हूं, वे सब तो तुम्हारे जितनी हैं, फिर यह पीटर...''

वैंडी ने मुस्कराकर कहा, ''मां, अगर तुमने पीटर पैन के बारे में सुना हैं, तो तुम्हें यह भी जरूरी पता होगा कि पीटर पैन कभी बड़ा नहीं होता, न ही आगे बड़ा होगा। तुमने अपने बचपन में उसे जितना बड़ा सुना था, वह आज भी उतना-सा है। एक छोटे बच्चे जैसा छोटा।''

''यह कैसे हो सकता है? यह तो बड़ी विचित्र बात है। भला ऐसा भी कहीं होता है।'' श्रीमती डार्लिंग ने कहा।

''हां, बात हैरानी की तो है, पर यही सच है।'' वैंडी ने कहा।

वैंडी की बात से श्रीमती डार्लिंग परेशान हो उठीं। उस रात उन्हें ठीक से नींद भी नहीं आई। वह पीटर पैन के बारे में सोचती रही थीं- ''आखिर कौन है वह पीटर पैन नामक विचित्र बालक जो परियों के साथ रहता है, जिसकी उम्र और कद कभी नहीं बढ़ते। इसका मतलब यह हुआ श्रीमती डार्लिंग ने अपने बचपन में जिस पीटर पैन के बारे में सुना था, जैसी कल्पना की थी, वह आज भी बिल्कुल वैसा ही था।

उन्होंने सुबह बच्चों के पिता श्री डार्लिंग से बात की, उनसे पीटर पैन के बारे में पूछा, जिसे बचपन में वह भी जानते थे, पर श्री डार्लिंग ने उसकी बात हंसी में उड़ा दी। कहा, ''मैंने भी अनेक काल्पनिक कथाएं सुनी हैं, जो सिर्फ कहानियां होती हैं। बस

चिंता छोड़ो–कल बच्चे जब कोई नई कहानी सुनेंगे तो इस पीटर पैन को भूल जाएंगे।''

लेकिन ऐसा नहीं हो सका, क्योंकि एक दिन श्रीमती डार्लिंग ने बच्चों के कमरे के फर्श पर कुछ पत्ते पड़े हुए देखे। यह तो अजीब बात थी। रोज सुबह–शाम कमरे की अच्छी तरह सफाई होती थी और मिसेज डार्लिंग को अच्छी तरह याद था कि रात में जब वह बच्चों के कमरे में गई थीं तो फर्श एकदम साफ–सुथरा था, एक तिनका भी नहीं था वहां। फिर ये पत्ते कमरे के फर्श पर कहां से आ गए? क्योंकि कमरे की खिड़की रात को बंद रहती थी। तब इन पत्तों का रहस्य क्या था? उन्होंने बारी–बारी से हर बच्चे से पूछा तो सबका जवाब एक ही था, ''रात को कमरे का फर्श एकदम साफ था। वहां कुछ नहीं था तब फिर खिड़की–दरवाज़े बंद रहते हुए भी ये पत्ते कहां से आ गए? क्या कोई चुपचाप कमरे में आया था, लेकिन कैसे? बंद खिड़की, दरवाजों के कारण कोई बाहरी आदमी वहां आ नहीं सकता था, तब फिर?''

श्रीमती डार्लिंग ने वैंडी से पूछा तो वह बोली, ''मां, मुझे लगता है, इन पत्तों का संबंध पीटर पैन से है। हमें पता नहीं चला, पर वह रात में कमरे में जरूर आया था।'' फिर उसने मां को एक सपने के बारे में बताया कि कैसे उसने एक छोटे–से बच्चे को अपने पलंग पर बैठे देखा था। वह बहुत मीठी बांसुरी बजा रहा था। बोली, ''मां, कभी–कभी मुझे लगता है कि वह सपना नहीं, सच था। पीटर कमरे में आया था और उसने बांसुरी बजाई थी। वही इन पत्तों को कमरे के फर्श पर छोड़ गया।''

''मैंने तो बांसुरी की आवाज़ नहीं सुनी। मैं नहीं मानती कि कोई बंद खिड़की–दरवाजे को

पार करके अंदर आ सकता है।'' श्रीमती डार्लिंग ने उलझन भरे स्वर में कहा, ''अगर वैंडी ने सपना देखा तो फिर पत्ते फर्श पर कहां से आए?''

''आपको एक बात बताऊं, यह सपना नहीं, सच था, पीटर पैन सचमुच वैंडी के कमरे में आया था। लेकिन कैसे? खिड़की बंद थी और बच्चों का कमरा तीसरी मंजिल पर था। वहां खिड़की के रास्ते अगर कोई आ सकता था तो वह पीटर था। श्रीमती डार्लिंग ने अपने बाग में उगे पेड़ों और झाड़ियों को बहुत ध्यान से देखा था। कमरे में फर्श पर मिले पत्ते किसी पेड़-पौधे के नहीं थे। पत्तों को उलटने-पलटने पर उनका रंग कुछ बदलता हुआ लगता था। वे विचित्र आभा से चमकने लगते थे। वे साधारण पत्ते नहीं थे।

उस रात श्रीमती डार्लिंग बच्चों के कमरे में कुर्सी पर बैठी बुनाई कर रही थीं। तभी उनकी आंख लग गई। उन्हें एक विचित्र सपना दिखाई दिया कि बच्चे एक द्वीप पर पहुंच गए हैं और वहां खेल रहे हैं। तभी किसी ने उनके कान में कहा, ''यही पीटर पैन का नेवरलैंड है।''

उसी समय कमरे की बंद खिड़की के पल्ले जैसे किसी जादू से खुल गए और एक बच्चा कमरे में आ कूदा। उसके साथ एक विचित्र प्रकाश का गोला भी था जो इधर-उधर हिल रहा था। तभी श्रीमती डार्लिंग की नींद टूट गई। उन्होंने फर्श पर खड़े बच्चे को देखा, हवा में हिलते प्रकाश के गोले पर भी नजर डाली और फिर वह डर कर चीख उठीं। उनके होठों से निकला, ''यही है पीटर पैन।'' हां, सचमुच वही था पीटर पैन। उसने बदन पर पत्तों की बनी पोशाक पहनी हुई थी।

श्रीमती डार्लिंग की चीख सुनकर कुत्ता नाना भौंकता हुआ कमरे में घुस आया और उस विचित्र बच्चे की तरफ झपटा जो अगले ही पल खुली खिड़की से बाहर कूद गया। उसके साथ चलता प्रकाश का गोला भी कमरे से बाहर चला गया। वह एक नन्ही परी थी टिंकर बैल, जो जुगनू की तरह चमचमाती थी।

श्रीमती डार्लिंग दौड़कर खिड़की के पास जा पहुंची। बाहर घुप्प अंधेरा था। आकाश में तारे चमचमा रहे थे। श्रीमती डार्लिंग के होठों से निकला, ''हे मेरे भगवान, इतनी ऊंचाई से कूदकर क्या वह नन्हा बच्चा बचा होगा?'' वह मन की आंखों से देख रही थीं कि खिड़की के नीचे धरती पर एक छोटा बच्चा पड़ा है।

पर एक गड़बड़ हो गई। जैसे ही श्रीमती डार्लिंग की चीख सुनकर पीटर पैन खिड़की से बाहर कूदा, उसकी छाया खिड़की में अटक गई। वह मकड़ी के नरम जाले की तरह थी। श्रीमती डार्लिंग ने उसे कोई कपड़ा समझा और उतारकर एक ड्राअर में रख दिया। बाद में उन्होंने पति से उस घटना की चर्चा की तो वह भी परेशान हो गए। श्रीमती डार्लिंग ने बताया कि उन्होंने नीचे जाकर देखा था पर ज़मीन पर कोई बच्चा नहीं दिखाई दिया। आखिर खिड़की से कूदकर वह कहां गया होगा?

वैंडी के पिता हंसकर बोले, ''अब तुम भी मुझे कहानियां सुना रही हो, जिन्हें मैंने बचपन में सुना था और बड़े होते-होते भूल गया क्योंकि मुझे पता चल गया था कि यह सब कोरी गप्प है। तुमने जरूर कोई सपना देखा होगा। वरना यह तो हो ही नहीं सकता।'' कहकर वह अपने काम में लग गए। श्रीमती डार्लिंग को भी लगा। जरूर उस रात उन्हें भ्रम हुआ था और इसलिए उन्होंने इसे भूल जाना ही ठीक समझा।

कई दिन बीत गए। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था, जैसे घर में चलना चाहिए था। लेकिन फिर गड़बड़ हो गई। ❑

–क्रमशः

शहद की तलाश

–चैतन्य

राजा शेरू शेर को शहद खाने की इच्छा हुई। उसने मंत्री बीरू चीता को शहद खाने की इच्छा बताई, ''मंत्री, मुझे शहद खाने की इच्छा हो रही है। भारतीवन में शहद की कमी नहीं। शहद मंगवाइए।''

मंत्री बीरू को मजाक सूझा, ''महाराज, आप को शहद खाने की सनक तो चढ़ नहीं गई हैं?''

''सनक नहीं, शहद तंदुरूस्ती और शरीर के लिए काफी गुणकारी है। यह मैंने पढ़ा है।'' शेरू ने कहा।

''गुणकारी?'' बीरू ने हैरानी से कहा।

''जी हां, शहद बड़ा गुणकारी है। शहद त्वचा को सुंदर बनाता है। शरीर का वजन कम करता है। शरीर को ठीक रखता है। कैंसर की बीमारी का खतरा दूर करता है। आंखों की रोशनी बढ़ाता है। बालों और रोमों में चमक लाता है। हिमोग्लोबिन बढ़ाता है। सर्दी-जुकाम को दूर करता है। इसलिए मुझे शहद खाने की आवश्यकता है।'' शेरू ने दृढ़ता से कहा।

''महाराज, भारतीवन में शहद मिलने का ठिकाना भोलू को छोड़कर और कौन बता सकता है? आदेश हो तो भोलू को दरबार में हाजिर करूं?'' बीरू ने कहा।

''जी हां, भोलू को दरबार में हाजिर कीजिए।'' शेरू ने कहा।

मंत्री बीरू ने भोलू भालू को शेरू के दरबार में हाजिर होने का फरमान भेजा। फरमान सुनकर भोलू शेरू के दरबार में डरते-कांपते और झिझकते हुए हाजिर हुआ।

''भोलू, भारतीवन में शहद की कमी नहीं, पर शहद कहां मिलेगा, इसका ठिकाना तुम से बेहतर और कौन जानवर भारतीवन में बता सकता है? इसलिए शहद की तलाश करो।'' राजा शेरू ने भोलू से कहा।

शेरू के मुंह से शहद की बात सुन भोलू को बड़ा अचरज हुआ। उसने हकलाते हुए पूछा, ''महाराज, शहद का इस दरबार में क्या काम?''

''बेवकूफ! शहद खाता है मगर शहद का गुण नहीं जानता? शहद काफी गुणकारी है। इसलिए मुझे शहद खाना है।'' शेरू ने सच बताया।

मगर भोलू को शेरू की बातें मजाक लगीं।

''महाराज, आप और शहद?'' भोलू ने हिम्मत भिड़ा कर चुटकी ली।

''बेवकूफ! मैं शहद खा नहीं सकता? शेर घास नहीं खाता है, मगर घास खाने वालों को खाता है कि नहीं? जाओ, शहद की तलाश करो?'' शेरू ने रोबिले स्वर में सख्ती के साथ आदेश दिया।

''महाराज! मैं शहद की तलाश में इस वक्त निकल जाता हूं।'' भोलू ने सिर झुका कर कहा और तत्परता के साथ दरबार से निकल पड़ा।

शेरू के दरबार से निकल कर भोलू शहद की तलाश के लिए चल दिया। लेकिन उसको भारतीवन में शहद मिलने का ठिकाना कहीं दिखाई नहीं पड़ा। न तो किसी छोटे-ठिगने पेड़ों पर उसको शहद के छत्ते दिखाई पड़े।

आखिर सूरज ढलने के पहले भोलू मुंह लटका कर शेरू के दरबार में दाखिल हुआ।

''महाराज! आए दिन भारतीवन में शहद दुर्लभ हो गया है। शहद के छत्ते भारतीवन के इक्के-दुक्के और छोटे-छोटे पेड़ों पर दिखाई नहीं पड़े।'' भोलू ने शेरू के पास हकलाते हुए हाथ जोड़कर कहा।

''भारतीवन में शहद का मिलना दुर्लभ हो गया है? क्यों? क्या माजरा है?'' शेरू ने सख्ती दिखा कर पूछा।

भोलू ने नम्रता से जवाब दिया, ''महाराज, माजरा क्या है? यह तो मधुमक्खियों की रानियां बता सकती हैं।''

''भारतीवन में मधुमक्खियों की रानी कौन है? उसका नाम बताओ?'' शेरू ने पूछा।

''महाराज, एक नहीं, भारतीवन में मधुमक्खियों की तीन-तीन रानियां हैं। नैनी, सुनैनी और रैनी।'' मधुमक्खियों की रानियों के नाम बता कर भोलू दरबार से अपने घर चल दिया।

शेरू के आदेश से बीरू ने दूसरे दिन मधुमक्खियों की रानियों के नाम से दरबार में हाजिर होने का फरमान भेजा।

समस्या सुना दी।

मधुमक्खियों की रानियों की बातें शेरू ने बड़ी स्थिरता और धैर्यशीलता से सुनीं। बीरू तो यह सुनकर स्तब्ध हो उठा। क्योंकि नैनी, सुनैनी और रैनी की बातें सच थीं। उन्होंने बताया कि इंसान जंगल के छोटे-बड़े पेड़-पौधे बड़ी नृशंसता से लगातार काट रहा है। जिससे फूलों की कमी हो गई है।

सचमुच घने और बड़े पेड़ों, वनैल लताओं, पौधों और हरी घासों में फूल खिलते हैं। फूलों के रस के अभाव में मधुमक्खियां भला शहद कैसे जमातीं?

मधुमक्खियों की रानियों से शहद न मिलने की सच्चाई सुनकर शेरू ग्लानि से बोझिल हो गया।

''रानियों, आप बेकसूर हैं। कसूर मेरा है। इंसानों की क्रूरता से मैं भारतीवन के छोटे-बड़े पेड़ों को कटने से रक्षा कर नहीं सका। जंगल का राजा होने के नाते पेड़ों, पौधों, लताओं और वनैली घासों को बचाना मेरा कर्त्तव्य है। लेकिन मैं अपना कर्त्तव्य भूल रहा था कि जंगल के जानवरों, पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों, कीड़े-मकोड़ों और दूसरे जीवों के गुजर-बसर के आधार पेड़-पौधे और घनी लताएं हैं। भारतीवन के इन संसाधनों की रक्षा भविष्य में मैं जरूर करूंगा।'' शेरू ने व्यथित होकर संकल्प लिया।

शेरू के संकल्प से दरबार में बैठे जानवरों ने खुश होकर तालियां बजा दीं।

तालियों की गड़गड़ाहट से बीरू ने उत्तेजित होकर कहा, ''भारतीवन के पेड़ों, पौधों और लताओं की सुरक्षा हम सब जानवर मिलकर करेंगे।''

बीरू की बातें सुनकर सुनैनी बोली, ''पेड़ों, पौधों और लताओं में फूल खिलेंगे। हम मधुमक्खियां फूलों के रस से शहद तैयार करेंगी। शहद की तलाश में फिर किसी जानवर को भटकना नहीं पड़ेगा।'' ❑

–पो. कोटगढ़, नोवामुण्डी बाजार, जिला-प. सिंहभूम, झारखंड-833218

नई साईकिल

–पवन कुमार वर्मा

आखिर प्रत्यक्ष की बात मान ली गई। पापा ने आज उसे नई साईकिल खरीद ही दी। बहुत दिनों से उसने साईकिल की रट लगा रखी थी।

उसकी जिद के पीछे एक कारण था। असल में उसका स्कूल घर से बहुत दूर था। उसे पैदल ही स्कूल जाना पड़ता था। इसीलिए वह पापा से साईकिल की जिद कर रहा था।

नई साईकिल पाकर प्रत्यक्ष बहुत खुश था। उसे अभी ठीक से साईकिल चलानी नहीं आती थी। जब भी वह थोड़ा चलाने की कोशिश करता तो साईकिल डगमग-डगमग होने लगती। कई बार तो वह गिर भी जाता था। उसे गिरा देखकर आस-पास के लोग हंसने लगते थे। तब प्रत्यक्ष को बहुत बुरा लगता था।

''कोई बात नहीं बेटा। शुरू-शुरू में ऐसा होता है। घबराओ मत! कोशिश करते रहा। जल्दी ही सीख जाओगे।'' पापा उसका उत्साह बढ़ाते रहते थे।

कुछ और दिन बीते तो प्रत्यक्ष को साइकिल संभालनी आ गई। अब तो वह थोड़ा बहुत चलाने भी लगा।

आज उसने पापा से पूछा कि क्या वह साईकिल लेकर स्कूल जाए? पहले तो पापा थोड़ा घबराए, लेकिन बाद में उन्होंने उसे अनुमति दे दी। नहाने से पहले उसने अपनी साईकिल पानी से खूब धोई। साईकिल एकदम चमक गई। पहली बार वह घर से दूर जा रही थी।

प्रत्यक्ष तैयार होकर बाहर आया। झटपट साईकिल निकाली। पीछे कैरियर पर अपना स्कूल-बैग रखा और चलने के लिए तैयार हो गया।

''बेटा! पहली बार साईकिल लेकर जा रहे हो। संभल कर जाना।'' मम्मी ने उसे समझाया।

''आप चिंता मत कीजिए। मैं बहुत धीरे-धीरे जाऊंगा।''

उसने मम्मी को भरोसा दिलाया।

घर से निकल कर वह सड़क पर आ गया। तेज आती-जाती गाड़ियों से उसे बहुत डर लग रहा था। लेकिन धीरे-धीरे वह स्कूल पहुंच गया।

''अरे! वह देखो, प्रत्यक्ष आज साईकिल से आया है।'' कृष्णा ने उसे दूर से ही देख लिया।

कृष्णा के साथ उसकी कक्षा के और भी दोस्त दोड़कर उसके पास आ गए। सब के सब साईकिल की खूब प्रशंसा कर रहे थे। साईकिल की प्रशंसा सुनकर प्रत्यक्ष बहुत खुश हो रहा था। कोई पैडल छू रहा था तो कोई घंटी बजा रहा था।

प्रत्यक्ष ने बड़ी सावधानी से अपनी साईकिल को स्टैंड में लगाया और अपनी कक्षा में चला गया। अब तो यह रोज की बात हो गई। प्रत्यक्ष अब साईकिल से ही स्कूल आने-जाने लगा।

पहले तो वह साईकिल का बहुत ध्यान रखता था। स्कूल से लौटने पर साईकिल को ठीक से स्टैंड पर खड़ा करना, उसकी सफाई करना, उसकी टायरों में हवा भराना, पहियों और ब्रेक में तेल डालने का काम वह बराबर करता था। लेकिन जैसे-जैसे साईकिल पुरानी होने लगी, उसने उस पर ध्यान देना कम कर दिया।

अब तो स्कूल से लौटते ही वह साईकिल को एक ओर खड़ा कर देता था। फिर अगले दिन स्कूल के समय ही उसे साईकिल की याद आती थी। उसकी साफ-सफाई की ओर तो उसका ध्यान ही नहीं जाता था। कई बार पापा उसे टोकते भी थे। लेकिन उस पर कोई असर नहीं होता था।

एक दिन उन्होंने प्रत्यक्ष को पास बुलाया और बोले, ''देखो बेटा! अब तो तुम साईकिल से स्कूल जाते हो। साईकिल की मदद से तुम आसानी से स्कूल पहुंच जाते हो। याद करो जब तुम्हारे पास साईकिल नहीं थी तब तुम्हें स्कूल जाने में कितनी परेशानी होती थी? इसलिए साईकिल का भी थोड़ा ध्यान रखा करो।'' प्रत्यक्ष ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

आज से परीक्षा शुरू होने वाली थी। बच्चे पढ़ाई में लगे थे। प्रत्यक्ष भी जी-जान से परीक्षा की तैयारी में जुटा था।

''बेटा! अब तैयार हो जाओ। स्कूल का समय हो गया है।'' मम्मी ने *किचेन* से आवाज़ लगाई।

''बस-बस जा रहा हूं।'' प्रत्यक्ष बोला और स्कूल की तैयारी में लग गया। आज उसे थोड़ी देर भी हो गई थी। इसलिए वह जल्दी-जल्दी अपने काम निपटा रहा था।

थोड़ी देर में तैयार होकर बाहर आया और अपनी साईकिल निकाली। लेकिन यह क्या? साईकिल में तो हवा ही नहीं थी। तो वह कैसे स्कूल जाएगा? वैसे भी आज थोड़ी देर हो गई है। वह एकदम से घबरा गया।

''क्या हो गया बेटा?'' मम्मी ने पूछा।

''साईकिल में तो हवा ही नहीं है। अब मैं स्कूल कैसे जाऊंगा?'' प्रत्यक्ष बोला।

''लो! अब क्या होगा? साईकिल पर तो तुमने ध्यान ही देना बंद कर दिया है। पापा ने भी तुम्हें इतना समझाया लेकिन तुम समझो तब न। आज तो पापा भी नहीं हैं।'' मम्मी भी परेशान होने लगीं।

''मुझे परीक्षा में देर हो जाएगी। अब मैं क्या करूं?'' प्रत्यक्ष की आंखों में आंसू आ गए।

''तुम घबराओ मत, हम कुछ करते हैं।'' इतना कहकर मम्मी तेजी से अंदर गई और तुरंत बाहर भी आ गई।

उन्होंने घर में ताला लगाया और प्रत्यक्ष को लेकर चल पड़ीं। जल्दी-जल्दी चल कर दोनों सड़क तक आए। बड़ी मुश्किल से उन्होंने ऑटो पकड़ा और स्कूल तक पहुंचे।

फिर भी देर हो चुकी थी। परीक्षा के लिए सभी कक्षा में बैठ गए थे। लेकिन जब मम्मी ने सारी बात बताई तो प्रत्यक्ष को अंदर जाने दिया गया।

परीक्षा के बाद प्रत्यक्ष बाहर आया। मम्मी उसका वहीं इंतजार कर रही थी। आज वह बहुत शर्मिंदा था। उसके कारण मम्मी को बहुत परेशान होना पड़ा। उन्होंने सवेरे से कुछ खाया भी नहीं था। उसने तय किया कि घर पहुंच कर सबसे पहले वह अपनी साईकिल ठीक कराएगा और अब हमेशा उस पर ध्यान देगा। ❑

–आमघाट कॉलोनी (पानी टंकी के पूर्व) आमघाट, सुभाष नगर, जिला-गाजीपुर, उ.प्र. -233001

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

(सितंबर, 2019)

बाल भारती का लोकप्रिय कॉलम 'चित्र बनाओ प्रतियोगिता' पाठकों की मांग पर पुनः आरंभ किया गया है। इस कूपन के साथ 31 जुलाई, 2019 तक *'अध्यापक हमारे मार्गदर्शक'* पर आधारित एक आकर्षक चित्र बनाकर हमारे पास भेजें। पुरस्कृत तथा सराहनीय चित्रों को *बाल भारती* में प्रकाशित किया जाएगा। प्रथम विजेता को एक वर्ष तक हमारी ओर से *बाल भारती* की मुफ्त सदस्यता दी जाएगी।

नाम .....

आयु .....

पता .....

.....

.....

इस प्रतियोगिता में 16 वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं।

दुनिया हमारे आस-पास

डायनासोर युग के पेड़ का जीवाश्म हिमाचल में मिला

हिमाचल प्रदेश में शिमला जिले के खड़ापत्थर में करीब 2 करोड़ साल पुराने पेड़ का एक जीवाश्म मिला है। यह भूगर्भ विज्ञानियों को खुदाई के वक्त मिला। राज्य जीवाश्म संग्रहालय के प्रमुख हरीश चौहान के अनुसार ये जीवाश्म डायनासोर युग का है। विज्ञानिकों का मानना है इस जीवाश्म के मिलने से मेसोजोइक युग और भौगोलिक परिस्थितियों में हुए बदलावों के बारे में और जानकारी मिल सकेगी। फिलहाल यह पता नहीं चल सका है कि किस पेड़ का जीवाश्म है और इसकी माप क्या है। बहरहाल, इसे संरक्षित किया जा रहा है। जल्द ही इस जीवाश्म को पुरातत्व विभाग को सौंपा जाएगा। हिमाचल प्रदेश की रेंज में सबसे पहले फूल-पत्तियों के जीवाश्म का पता 1864 में अंग्रेज मैलिनकोट ने लगाया था। यहां के इलाकों में इस तरह के जीवाश्म भरे पड़े हैं। आए दिन हिमाचल प्रदेश के पहाड़ों की रेंज में पेड़ों के जीवाश्म मिलते रहते हैं।

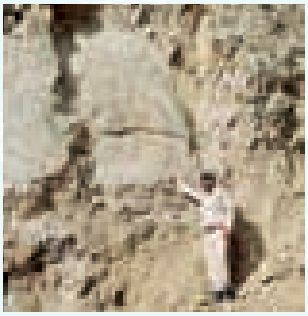

दृष्टिहीन लोगों के लिए स्मार्ट सूटकेस और एप

वैज्ञानिकों ने ऐसे स्मार्ट सूटकेस का निर्माण करने में सफलता हासिल की है जिनकी मदद से दृष्टिहीन लोग किसी चीज से टकराने से बच सकते हैं। इसके साथ ही ऐसे स्मार्टफोन एप का विकास किया गया है जिसकी सहायता से वे विमानपत्तनों में सुरक्षित एवं स्वतंत्र रूप से आवागमन कर सकते हैं। इनका विकास कार्नेगी मेल्लन विश्वविद्यालय ने किया है। इस नेवीगेशन एप को नेवकोग नाम दिया गया है। यह एप प्रत्येक मोड़ पर ध्वनि के माध्यम से प्रत्येक उपयोगकर्ता को चेतावनी देता है और उसे दरवाजों और दूसरी चीजों से टकराने से बचा सकता है। इसी तरह सूटकेस जब किसी चीज से टकराने ही जा रहा होता है तो वह बीप की ध्वनि करता है। पिट्सबर्ग अंतरराष्ट्रीय विमानपत्तन में इन दोनों का प्रयोग किया गया और इन्हें बेहद सफल माना गया।

4500 साल पुराने दो मकबरे मिले

पुरातत्वविदों को गीजा की पिरामिड के पास 4500 साल पुराने दो मकबरे मिले हैं। यह मकबरे पांचवें शासनकाल के समय के हैं जो कि 2563 से लेकर 2423 ईसा पूर्व का समय माना जाता है। पुरातत्वविदों ने कहा कि मकबरे राजा खफ्रे के दो प्रमुख लोगों के माने जा रहे हैं जिनमें से एक पुजारी हो सकता है। मिस्त्र के पुरातत्व मंत्री के अनुसार कि मकबरे में मिली ममी का नाम बेहनुईका था। वह फराओ के शासन में सात महत्वपूर्ण पदों को जिम्मेदारी संभाल रहा था। दूसरा मकबरा न्यूई नामक व्यक्ति का था।

दस लाख प्रजातियों को खतरा

संयुक्त राष्ट्र ने अपने एक आकलन में कहा कि वनस्पति और जीवों की दस लाख प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर पहुंच गई हैं। पृथ्वी की करीब 80 लाख प्रजातियां कई हजार गुणा तेजी से खत्म हो रहीं है। आशंका है कि छह करोड़, 60 लाख साल पहले डायनासोर के विलुप्त होने के बाद से पृथ्वी पर पहली बार इतनी अधिक प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं। मानवता उसी दुनिया को नष्ट कर रही है, जिस पर उसका अस्तित्व है। निकट भविष्य में होने वाली यह विलुप्ति पिछले एक करोड़ वर्षों की तुलना में कई हजार गुणा तेजी से होगी। रिपोर्ट का दावा है कि पृथ्वी से डायनासोर विलुप्ति के बाद यह सबसे बड़ी विलुप्ति संबंधी घटना बन जाएगी। संयुक्त राष्ट्र के 450 विशेषज्ञों द्वारा तैयार 'समरी फॉर पॉलिसीमेकर्स' रिपोर्ट ने यह परिणाम दिए हैं। इस रिपोर्ट को 132 देशों की एक बैठक में मान्यता दी गई। कहा गया है कि इंसान उसी प्रकृति को नष्ट कर रहा है, जिस पर उसका अस्तित्व निर्भर है। ख़ामियाजा प्रजातियां भुगत रही हैं।

(विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं से संकलित)

रच दे नूतन संसार बेटी

–स्वाती शाकम्भरी

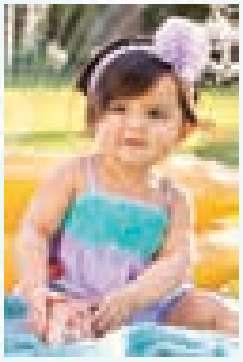

नीति, नियम, व्यवहार बेटी
सृष्टि का आधार बेटी
निराकार नैसर्गिक छवि को
देती नित आकार बेटी।

जो अतीत में रही उपेक्षित
आज नहीं लाचार बेटी
मिटा नकारात्मक जड़ता जग की
ऊर्जा, ओज, संचार बेटी।

पाए ज्ञान तो छुए आसमान
खोले पंख तो रचे कीर्तिमान
शून्य में भी सृजन कर
रच दे नूतन संसार बेटी।

बेटी को मिले सुंदर संसार
पढ़ाई-लिखाई संग लाड़-प्यार
बेटी को उसका अधिकार दिलाओ
हां, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

–ग्राम+पो-खानपुर, जिला-समस्तीपुर, बिहार-848117

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

शीर्षक : गर्मी उफ! गर्मी और बढ़ती जनसंख्या घटते संसाधन

विजेता – अनुराग शर्मा, श्रवण कुमारी स्कूल, चिरहुला रीवा, म.प्र.-486001 (इन्हें एक वर्ष तक बाल भारती मुफ्त भेजी जाएगी)

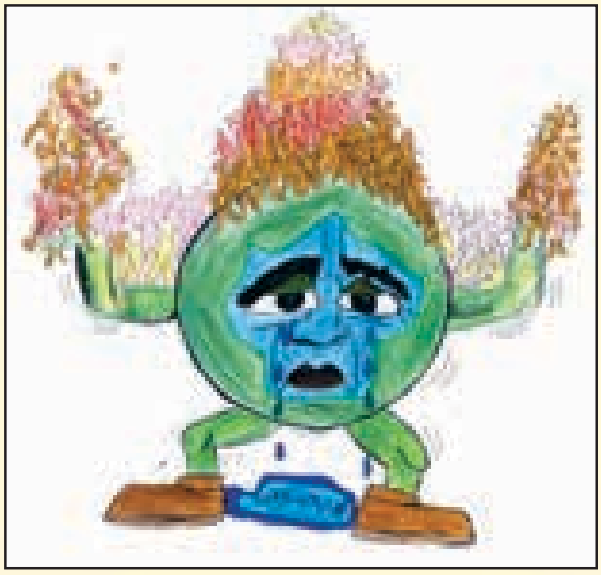

विजेता – चेतन, आर्मी पब्लिक स्कूल, अमृतसर, पंजाब-143107 (इन्हें एक वर्ष तक बाल भारती मुफ्त भेजी जाएगी)

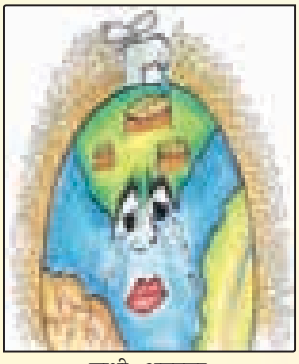

साक्षी, अमृतसर

अमोल अग्रवाल, मेरठ

कृतिका त्यागी, अमृतसर

श्रीया सिंह, गोमती नगर, लखनऊ

शिफा राज, देहात, उ.प्र.

वैष्णवी शर्मा, बिहार

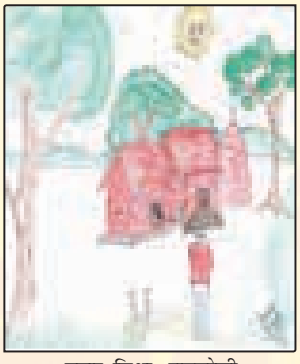

प्रखर मिश्रा, रायबरेली

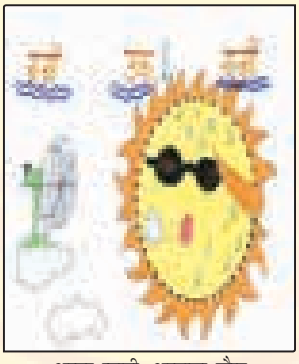

अम्बर त्यागी, अम्बाला कैन्ट

मैंने एक जादू सीखा है मिकी!
अच्छा!? वाह!
सीखा है कि मैं बता सकता हूं कि किसने कब क्या खाया है?
हैं? यह कैसा जादू है? ऐसा कैसे करोगे?
मैं दांतों को देखकर ऐसा जादू दिखाता हूं!
ओह! तो फिर देखो मेरे दांत और दिखाओ अपनी जादूगरी!
मिकी ने उसके दांत देखे, और-
तुमने कल इमली सांभर खाया था न! ये है मेरी जादूगरी!
बिलकुल गलत! तुम्हारी जादूगरी फेल हो गई! हीहीही...क्योंकि...
...इमली सांभर तो मैंने कल नहीं, बल्कि परसों खाए थे!
हीहीही... तब तो यह मेरे दांतों की जादूगरी है!
समाप्त

वार्षिक मूल्य : ₹ 160
आर एन आई 699/57
डाक रजिस्टर्ड सं. डी एल (एस) – 05/3214/2018-20
बिना पूर्व भुगतान के साथ आर.एम.एस.
दिल्ली से पोस्ट करने के लिए लाइसेंस यू (डी एन)–51/2018-20
08 जून, 2019 को प्रकाशित • 18–19 जून 2019 को डाक द्वारा जारी

RNI 699/57
Postal Regd. No. DL (S) - 05/3214/2018-20
Licenced U (DN) - 51/2018-20
to post without pre-payment at RMS Delhi

प्रकाशक व मुद्रक : डॉ. साधना राउत, प्रधान महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
मुद्रक : **इंडिया ऑफसेट प्रैस,** ए-1, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली। संपादक : आभा गौड़